

**THE CHARACTER OF
CHRIST AND MUHAMMAD
COMPARED**

السيرة النبوية
والمسيحية

عَلَامَةُ جِي. اِيل. ثَاكُور دَاس

सीरत-ए-मसीह व मुहम्मद

अल्लामा जी. एल. ठाकुर दास

1886

मसीह को बलिआल के साथ कौनसी मुवाफ़िक़त है

(इन्जील शरीफ़ ख़त-ए-दोम अहले-कुरिन्थियों रूकूअ 6 आयत 15)

What harmony is there?
Between Christ and Belial (2 Cor.6:15)

THE LIFE OF MUHAMMAD & JESUS CHRIST CAMPARED

BY

ALLAMA.G.L. THAKKUR DAS

रिसाला

सीरत-ए-मसीह व मुहम्मद

मुसन्निफ़

अल्लामा जी. एल. ठाकुर दास

1886 ई.



Rev Allama G.L.Thakur Das

1852 - 1910

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

तम्हीद.....	5
दफ़ाअ 1 - इन्सान गुनेहगार हैं क्या जनाब-ए-मसीह और जनाब-ए-मुहम्मद भी ऐसे ही थे	9
दफ़ाअ 2 - इन्सान बसबब गुनाह के अपनी गुफ्तार व रफ्तार में साबित-क़दम और उस्तुवार नहीं हैं क्या जनाबे मसीह और जनाबे मुहम्मद भी ऐसे ही थे।	17
दफ़ाअ 3 - इन्सान एक दूसरे के बद-ख़वाह और मुखालिफ़ होते हैं क्या मसीह और मुहम्मद भी ऐसे ही थे.....	28
दफ़ाअ 4 - इन्सान फ़रेब देते और फ़रेब खाते हैं क्या मसीह और मुहम्मद भी ऐसे ही थे	34

सीरत-ए-मसीह व मुहम्मद

तम्हीद

तजुर्बे से और सरीहन भी ये बात काबिल-ए-तस्लीम है कि जब कोई शख्स किसी ओहदे या काम पर मुम्ताज़ होता है तो उस में इस ओहदे या काम के लायक औसाफ़ होने चाहिए। क्योंकि अगर मुनासिब खासियत का शख्स ना होगा तो मुद्दा ओहदे की तहसील में शिकस्त होगी या कजी (कमज़ोरी) पाई जाएगी। चुनान्चे हम देखते हैं कि वालदेन होने लिए खसलत और परवरिश करने की खासियत हो। दोस्त में वफ़ा हो। मर्द-ए-सिपाही में जवाँमर्दी हो। आलिम में इल्म हो। मुंसिफ़ में इन्साफ़ हो। बादशाह में हौसला और दानाई हो। मुस्लेह में इस्लाह का मलिका हो। किसी गिरोह या मुल्क के सफ़ीर में दानाई और तजुर्बा और हुब्ब-ए-वतनी हो। तब ये काम जो उनके सपुर्द हैं बखूबी अंजाम को पहुंचेंगे। मगर इन्सानों में देखा और सुना जाता है, कि अक्सर औकात इन उमूर में नुक़स आ जाता है। दोस्त में बेवफ़ाई और मुंसिफ़ में बे-इंसाफी, सिपाही में बुज़दिली, आलिम में बेइल्मी और मुस्लेह में कमज़ोरी वगैरह नुमायां होती हैं।

मगर जब खुदाए हकीम व कदीर किसी काम को करता है तो उस में नुक़सान और शिकस्त का दखल नहीं। और ना उस के कामों की निस्बत ऐसा खयाल वाजिब है। या जब वो किसी शख्स को किसी काम पर मुम्ताज़ करता है। तो उस ओहदे और ओहदेदार में निस्बत होती है। उस में वो सीरत पूरी की जाती है जो उस को मुद्दा मक्सूद के लायक करे और ये बात खुसूसुन उस की पैगम्बरी में पेशतर ज़हूर दिखाई हो। जब किसी को किसी काम के लिए रसूल मुकर्रर किया तो उस में उस काम के लिए काबिलियत नुमायां की गई। ज़रा खयाल करो कि मूसा कौन था जो बनी-इस्राईल को मिस्र से निकालता और उनको वो खुदा और वो शराअ (शरीअत) बताता जो उसने ज़ाहिर किया है। खुदा ही ने उस को उस काम के लायक किया और उसने वो मकासिद पूरे किए। **“पस अब तू जा। मैं तुझे फिरौन पास भेजता हूँ मेरे लोगों को जो बनी-इस्राईल हैं मिस्र से निकाल।”** (तौरैत शरीफ़ किताब ख़ुरूज रूकूअ 3 आयत 10) हर चंद मूसा ने उज़्र किए कि मैं कौन हूँ जो फिरौन के पास जाऊँ और बनी-इस्राईल को मिस्र से निकालूँ फिर ये कि जब बनी-

इस्राईल पास पहुँचूँ तो उन्हें क्या बताऊँ। फिर ये वो मुझ पर ईमान लाएंगे और ना मेरी बात सुनेंगे। और फिर ये कि ऐ मेरे परवरदिगार मैं फ़साहत नहीं रखता ना तो आगे से और ना जब से तूने अपने बंदे से कलाम किया और मेरी ज़बान और बातों में लुक्नत है। मगर खुदा ने उस को हर उज़्र का जवाब दिया और उसे तैयार किया और उस में वो सीरत और औसाफ़ मौजूद किए जिनसे वो उस काम के लायक हो गया। और वो ये थे कि मैं तेरी और उस की बात के साथ हूँगा और तुम जो कुछ करोगे तुम को बतलाऊंगा वगैरह।

इसी तरह हम देखते हैं कि जनाब-ए-मसीह की शख़्सी खासियत उस काम के लायक थी। जिसके लिए आप भेजे गए और वह काम ये था कि बागी और गुमराह इन्सान को खुदा से मिला दे। और अब हम इस अम्र को मए इस बात के दर्याफ़्त करेंगे कि हज़रत मुहम्मद की ज़ाती सीरत क्या थी। आया वो भी इस काम के लायक खासियत रखते थे जिसके लिए मसीह आए और अगर वो इस काम के लिए ना आए तो उनका आना बे-ठिकाना है। क्योंकि वही एक काम था जिसकी बनी-आदम को ज़रूरत थी। सो अगर मसीह इस काम के लायक ना थे या उनसे ना पूरा हुआ तब तो खुदा ने हज़रत मुहम्मद को इन औसाफ़-ए-ज़रूरी से पुर करके भेजा होगा इसलिए दोनों की सीरत-ए-ज़ाती और मस्नूई से आगाह होना मुकद्दम है।

अब पेशतर इस से कि हम ऐसी सीरत की वाकई सूरत देखें इस बात का खयाल रखें कि दुनिया को कैसे सुलह और उस्ताद और मुंजी (नजात-दहिंदा) की ज़रूरत थी और है। अगर इन्सान उमूमन पैसे टके के कर्ज़दार होते ऐसा कि कुल साहूकारों के भी दिवालिये निकले होते तो अलबत्ता ऐसे शख़्स की ज़रूरत होती जो इस किस्म की तकलीफ़ से रिहा करे। अगर कुल इन्सान किसी जिस्मानी मर्ज़ में गिरफ़्तार होते तो किसी साहिब-ए-तिब्ब (हकीम) की हाजत थी। अगर नंगे और भूके होते तो किसी सैर-कुनिंदा का आना लाज़िम था। अगर क़वानीन कुद्रत से जिनको जिस्मानी क़वानीन कहते हैं। जिनसे इन्सान अलल-उमूम मुकय्यद हैं। और अगर जिनसे तजावुज़ करना गुनाह में दाखिल हो। तो किसी नेचुरल फिलासफ़र की ज़रूरत होती। जो बतलाता कि आग को मत छूना, हाथ जल जाएगा। पानी में बेसामान मत जाना डूब जाओगे। बुलंदी से मत गिरना। ज़र्ब (चोट) लगेगी। अपने जिस्म को किसी आले से मत काटना कट जाएगा। गरज़ कि इसी किस्म की भूल चूक के लिए ऐसा हादी ज़रूर था। मगर खुदावंद करीम इन्सान की ऐसी हाजतों को और ही तरह रफ़ा करता है। लेकिन इन्सान तो गुनाह से खराब हो गए। गुनाह से और गुनाह में पलीद हो

गए। हवा व होस (नफसानी खवाहिश) के हमलों और ग़लबों में अक़ल असीर (कैद) हो गई और नफ़सानी रग़बत ही ने शराअ (शरीअत) होने का करार वाक़ई पाया। अपने फ़राइज़ को इन्सान भूल गया। सदाक़त को पामाल किया और इनके एवज़ बर्ग़शतगी और बतालत उसूल ठहरे पस वो नजात-दहिंदा और उस्ताद होना चाहिए जो इन बातों से नजात दे और नजात-दहिंदा में हम वो खासियतें तलाश करेंगे और चाहेंगे जो इस काम के लायक हों। वर्ना पेशदस्ती से या अंधा धुंद हर कस व नाकिस को मुंजी (नजात-दहिंदा) और उस्ताद और हादी (हिदायत देने वाला) नहीं मान सकते पर अगर उस की ज़ाती सीरत औरों के हो तो इस काम के लायक ना होगा। मसलन अगर कोई सिपहसालार किसी बुज़दिल फ़ौज का सर गिरोह हो तो उस को लाज़िम होगा कि आप दिलेर हो। और अगर ना ख़वांदों (अनपदों) का उस्ताद हो तो ज़रूर उस में ख़वांदगी (पढ़ने लिखने) की ख़ूबी होनी चाहिए। इसी तरह खयाल करो कि हमसार गुनेहगार इन्सानों के लिए कैसा हादी और मुंजी (नजात-दहिंदा) दरकार है। इन्सान की ज़ाती हालत तो ज़ाहिर है मुंजी (नजात-दहिंदा) की हालत मालूम करनी चाहिए और हम देखेंगे कि सिवाए जनाब मसीह के किसी में ये ज़ाती सीरत ये ख़ूबी और खसलत नहीं है। और इस बार हम अक्सरों का ज़िक्र नहीं सुनाएंगे। मगर सिर्फ जनाब मसीह और जनाब मुहम्मद का। और इन की निस्बत सिर्फ (Macaulay's, Cicero and Molana Rumi) सिसरो व रोमी सुखनवर और मक़ाली साहब के क़ौल पर इक्तिफ़ा किया जाएगा और वो ये हैं। मुक़द्दम-उल-ज़िक्र यूँ कहता है कि :-

“कोई ऐसा फिलासफर कैसा नायाब है जिसकी ज़िंदगी और दिल ऐसे हों जैसा अक़ल तलब करती है जो अपनी तालीम को एक इल्मी दिखलावा नहीं मगर कानून-ए-ज़िंदगी समझता हो। जो अपना ताबेदार हो और अपने हुक़मों का लिहाज़ करता हो (यानी जैसा हुक़म करता आप खुद उसके ताबे हो) और उसकी तामील करता हो हालाँकि ये कैसा आम है कि बुग्ज़े बुतलान और गुरुर से इस क़द्र पुर है उन के लिए बेहतर था कि अगर वह सिखलाए ना जाते। बाअज़ ज़र के गुलाम बाअज़ तकब्बुर के। बहुतेरे अपने हवा व होस (नफसानी खवाहिश) के। ऐसा कि उन की ज़िंदगी उन की बातों के साथ लड़ाई करती हैं। मक़ाली साहब कहता है कि उन्हीं इस बात का वाअदा किया जो हो ना सके और जो हो सके उस की तहक़ीर की। उन्हीं ने दुनिया को लंबे लंबे लफ़्ज़ों और लंबी लंबी डाढ़ियों से भर दिया और उस को वैसा ही जाहिल और शरीर छोड़ दिया जैसा पाया था।” (life of Johnson)

वाज़ेह रहे कि हम सिर्फ नजात की निस्बत नहीं बल्कि तालीम और तामील की निस्बत भी जो नजात के मुताल्लिक हैं उस मुंजी (नजात-दहिंदा) में खोजेंगे। जिनसे किसी मुंजी (नजात-दहिंदा) की फ़ौकियत और क़ाबिलियत ज़ाती यानी उस की वाजिबी सीरत ज़ाती मालूम होगी। और ये ना होगा कि अगर किसी ने कह दिया कि बदी ना करो और नेकी करो और एक-आध बातें भलाई की और चंद एक बुराई की कह सुनाएँ तो बस हम इन्सान इतनी बात पर अपनी रूहें उन के हाथ बेच डालें। उस की ज़िंदगी में उस की तालीम की अदमे तामील हमको बे-दिल करेगी और इस तालीम का असर खो देगी। वो तालीम मुर्दा तालीम नज़र आएगी जो उस की ज़िंदगी में ज़ाहिर ना हुई। इसलिए हम अपनी ऐसी हालत में ऐसे बातूनी भाईयों से चौकस रहें क्योंकि हम देख रहे हैं कि एक क़ौम नहीं कुल ग़ैर क़ौम इस धोके के काबू में है। और इस छोटे रिसाले में हमारी अर्ज़ बिरादराने अहले-इस्लाम को रिहा करने की है। उम्मीद है कि कमतरीन की गुज़ारिशों और आगाहियों को बगोश और दिल से सुनेंगे। और खुदा के फ़ज़ल से ये बात कुछ बईद नहीं है। कि लोगों को तौबा बख़शे।



दफ़ाअ 1 - इन्सान गुनेहगार हैं क्या जनाब-ए-मसीह और जनाब-ए-मुहम्मद भी ऐसे ही थे

पाकीज़गी क्या है कौन इसकी तारीफ़ कर सकता। कौन है जो इस की ख्याली ही तस्वीर खींचे है। कब और किस की निस्बत कभी ऐसा हुआ था। जिस बात का किसी इन्सान को तजुर्बा नहीं होता और ना हुआ वो उस का कामिल नमूना क्योंकर सुनाए या दिखाए? इल्ला यह भी वो वस्फ़ है जो हर अहसन और उम्दा खयाल और कलाम और काम का दाइमी मब्दा है। अक्ल और इरादा और ख्वाहिशें जो ऐसी ऐसी बद-अंदेशी और बद ख्वाहीयाँ और खराबियां ज़ाहिर करती हैं ऐसा हरगिज़ ना करते अगर दिल में सरासर पाकीज़गी राइज होती। ऐसा हरगिज़ वकूअ में ना आता। अगर पाकीज़गी का दिलों पर तसल्लुत मुतलक़ होता। नबियों ने और बड़े-बड़े आलिमों ने अक्सरों की ज़िंदगी का अहवाल और अख़लाक़ का तज़िकरा क़लमबंद किया। लेकिन किसी ने पाकीज़गी और अख़लाक़ का कामिल नमूना या वाक़ई सूरत नहीं दिखाई। और इस बात में हर एक हमपाया (बराबर) है। अबस में वो तक़रीरें और तहरीरें जो वाक़ई सूरत तो यक तरफ़ ख्याली सूरत भी नहीं बना सकें। वो हमारे किस काम में? ऐसी तक़रीरें तो करीबन हर मुल्क में कमोबेश मौजूद हैं लेकिन वो अख़लाक़ और पाकीज़गी का पैमाना नहीं। वो इस बात में आजिज़ हैं कि ऐसी मुहसिन सूरत की वाक़ई हस्ती बतलाएं। अलबत्ता अगर किसी ने फ़िलवाक़े ऐसा देखा हो या सुना हो तब ये मुश्किल आसान हो जाती है और अगर ये बात किसी को हासिल ना हो तो किसी की पैरवी करना इस गर्ज़ से कि हम भी पाक हो जाएं बेफ़ाइदा हैं। ये धोका है। इस अम्र की तलाश फ़क़त किसी की बातों ही में नहीं बल्कि बेशतर उस की ज़िंदगी में करनी चाहिए।

अगरचे पाकीज़गी की कामिल और वाक़ई सूरत का खयाल मुश्किल हो गया है। मगर फिर भी दुनिया के लोग अपने पेशवाओं की ज़िंदगी को पाक ज़िंदगी कहा करते हैं। और उनके मुताबिक़ अमल करने को ऐन सआदत खयाल करते हैं। मगर लोगों की ये राय या मदह किसी क़ौमी या ख़ास सोसाइटी की तर्ज़ मुआशरत या सोहबत या तर्बियत या दबाओ के बाइस है। मसलन हिन्दुस्तान में जो लोग ज़ात पात के बड़े पाबंद हैं। बुत-परस्ती में बड़े सरगर्म हैं। रामचंद्र जी की बहादुरी और कृष्ण जी के कलोलों पर बड़े फ़ीरनका हैं। वो लोग ऐसी बातों में कोई बुराई महसूस नहीं करते उन के ज़मीर पर इसी किस्म का

असर और दबाओ पड़ गया है और वो गोया सुन्न हो गया है। अब ये और इस किस्म की बातें ईसाइयों और मुसलमानों में निहायत ही ज़बून समझी जाती हैं और गुनाह हैं। फिर इसी तरह बहुतेरी बातें और आदतें अहले-अरब की और बादअज़ां मुसलमानान अजम की बवाइस मज़कूर के सबब ऐसी हो गई हैं कि वो उन को अच्छा और पुर-सवाब मानते हैं। मगर ईसाइयों की किताबों की रू से वो बुरी और गुनाह हैं। मसलन काअबा परस्ती, कस्रत इज़्दवाजी, कस्रत तलाक़, गुलामी, इन्कार-ए-कफ़ारा मसीह, इन्कार उलूहियत मसीह कलमा परस्ती, क़ब्र परस्ती, हज दीगर मिल्लत के लोगों का क़त्ल करना मुसलमानों में शरअन आमाल हसना और ईमान सादिक़ में दाखिल हैं और जन्नत को पहुंचाने वाले हैं। (देखो सूरह बकरह आयत 217, सूरह इमरान आयत 196, और सूरह सफ़ आयत 2) हालाँकि ईसाइयों के नज़दीक ये नफ़्सानी काम और ग़लत ईमान हैं और खुदा तआला की पाक हुज़ूरी से इन्सान को दूर रखने वाले हैं। पस गुनाह और पाकीज़गी की निस्बत ऐसे बाहम बरअक्स खयालों और आदतों और तर्बीयतों के सबब सच्ची पाकीज़गी की कामिल सूरत मुईन करना मुश्किल हो गया है। और ना सिर्फ़ लोग खुद अपनी मर्ज़ी की बातों और कामों को नेक सवाब समझते हैं। बल्कि अपने ऐसे खयाल खुदा के नज़दीक भी पसंदीदा करार देते हैं। और इसी लिए अपने अपने तरीक़ में कायम रहते हैं। नाज़रीन इस बात का अंदाज़ा सिर्फ़ इतनी बात से कर सकते हैं, कि हर मज़हब के लोग अपने मज़हब को खुदा की तरफ़ से कहते हैं। हाँ इसी सबब से एक कहता है कि बुत-परस्ती खुदा को मंज़ूर है। दूसरे कहते हैं कि रहज़नी और ख़ूरेज़ी खुदा का हुक़म है कोई ऐब नहीं। काअबा परस्ती सवाब है। तीसरा कहता है शहवत परस्ती ऐन नेचर के मुताबिक़ है। और खुदा ने इस को पास कर दिया है। पस यही सबब है कि लोग अपने अपने पेशवाओं की ईएसआई हरकतों को मअयूब (एब वाला) नहीं जानते बल्कि उन को पाक कहा करते हैं।

इस हाल में निहायत ज़रूरी अम्र है कि हम ख़ूब ग़ौर करें कि पाकीज़गी का इन्कार यानी गुनाह किस को कहते हैं? बाइबल फ़रमाती है कि "गुनाह खिलाफ़ शराअ (शरीअत) है।" अब शराअ (शरीअत) क्या है? शराअ (शरीअत) खुदाए खालिक़ का वो अख़लाकी और रास्त क़ानून है जो अख़लाकी बंदों के लिए इन्सान के ज़मीर और खुदा के कलाम बाइबल मुक़द्दस में मौजू किया गया है। ज़मीर के धुँदले और सुस्त हो जाने के के सबब खुदावंद ने शराअ (शरीअत) इल्हाम के ज़रीये अज़सर नौ फ़रमाई। वो शराअ (शरीअत) बज़ाता ऐसी रास्त और वाजिब है कि खुदावंद तआला इस से ग़ैर या बरअक्स शराअ (शरीअत) नहीं दे सकता था। क्योंकि खुदा रास्त है और रास्ती का बानी और उसका मुहाफ़िज़ है और

मुहाफ़िज़त वो इन्सान से तलब करता है। क्योंकि इन्सान को उस ने अख़लाकी वजूद बनाया है। वो शराअ (शरीअत) तौरैत की किताब ख़ुरूज 20 बाब में मुन्दरज है और इस शराअ (शरीअत) का खुलासा जनाब मसीह शारेअ आज़म ने मती की इन्जील 22 बाब 37 से 40 आयत में फ़रमाया है। शराअ (शरीअत) अख़लाकी के रास्त होने का वज़न और ख़ूबी ये है कि जब खुदा ने फ़रमाया कि “मेरे हुज़ूर तेरे लिए दूसरा खुदा ना होए” तो ये हुक़म अपने में रास्त है और रास्ती के खुदा ने ये हुक़म दिया। इस का बरअक्स हुक़म वो दे नहीं सकता। फिर जब फ़रमाया कि “तू ज़िना मत कर। लालच ना कर” वग़ैरह ऐसे और फ़क़त ऐसे अहक़ाम इसलिए फ़रमाए कि ये बातें बज़ाता भली हैं और खुदा ये हुक़म दे ही नहीं सकता कि तू ज़िना कर। तू लालच कर। तू खून कर वग़ैरह। और यही बाइस है कि जब इन्सान ने उमूमन और खुदा की ख़ास क़ौम ने ख़ुसूसून इन हुक़मों से तजावुज़ किया तो खुदा ने तजावुज़ की सज़ा ठहराई यानी लाज़िमी अज़्र और दुख किसी किस्म का। पस जबकि खुदा ने गुनाह को पहचानने के लिए शरीअत दी हुई है तो लोगों के खयालों और आदतों और ख्वाहिशों को जाने दो और याद रखो कि खुदा किसी को ऐसा प्यार नहीं करता कि उस को गुनाह करने की इजाज़त दे यानी शरीअत से तजावुज़ करना जायज़ करे। लोग अपनी बेवकुफी या नफ़सानियत की वजह से ऐसा जवाज़ बताएं तो ये कोई सनद नहीं है। चाहिए कि हम लोगों के फ़ेअलों को खुदा की शरीअत से जांचें ना कि अपनी या उन की आदतों और कमज़ोरियों और नापाकियों के असर से गुनाह को गुनाह ही ना जानें ज़ाहिर है कि दुनिया में कई आदमी गुज़रे हैं जिनकी ताज़ीम की जाती है। यहां तक उन के गुनाह गुनाह नहीं समझे जाते और यूं वो उन के साथ बराबर किए जाते हैं। जो गुनाह से बिल्कुल पाक था। अब हम दो शख्सों की सीरत बतौर मुक़ाबला पेश करते हैं जिनकी पैरवी में दुनिया का करीबन निस्फ़ हिस्सा आबादी का फ़रेफ़ता व नाज़ां हो रहा है और वो ये हैं :-

जनाब मसीह

1. बज़ाते गुनाह से पाक

अगरचे इन्सानी तजुर्बे इस अम्र में मायूस करता है कि कोई शख्स गुनाह से पाक हो ताहम एक शख्स और फ़क़त वही आलम अख़लाक़ में नज़र

जनाब मुहम्मद

1. बज़ाते गुनेहगार

तजुर्बा ज़िंदगियों का इस अम्र को साबित करता है कि सिलसिला तौलीद मुरव्वजा में से कोई शख्स पाक नहीं निकल सकता। इस सिलसिले

आते हैं जो बज़ाता गुनाह से पाक है। उस की ज़िंदगी ऐसे ढब पर हुई कि गुनाह का उस में दखल नहीं हो सकता था। गौर करो कि आदम अक्वल क्यों पाक था। इसलिए कि वो गोया खुदा से पैदा हुआ। वो हस्ती जो आदम से पहले थी पाक थी और इसलिए वो जो एसी हस्ती से निकला बज़ाता पाक था। यानी खुदा की सूरत पर था। लेकिन फिर इन्सानी सिलसिला तौलीद का शुरू हुआ तो आदम का बेटा आदम की सूरत पर पैदा हुआ और इस पैदाइश से पेशतर चशमा बिगड़ गया था और इसलिए आदम का बेटा उस की नापाक सूरत पर पैदा हुआ पस अगर मसीह इस सिलसिले में पैदा होता तो वो भी आदम की सूरत पर पैदा होता और बज़ाता गुनाह से पाक ना होता। मगर उस का पाक होना इसलिए मुम्किन हुआ कि वो एक नई खल्कत था मिस्ल आदम के उस की पैदाइश मोअजज़ाना थी। खुदा ने उस की निस्बत इस ज़ाती सिलसिला तौलीद में दखल दिया। ताकि इस सिलसिले की पलीदगी को जो असली कानून-ए-कुदरत के खिलाफ़ हो गई थी अस्ल के मुवाफ़िक़ पाक करे और इन्सान को मालूम करा दे कि बनी-आदम की मौजूदा हालत असली हालत नहीं है। ये हालत नापाक और वो पाक थी। और इस तौर से इन्सान को पाकीज़गी का कामिल नमूना दिखादे जिसकी इन्सान तलाश व आरजू करता है मगर ऐसा हासिल ना हुआ। और ये पलीद सिलसिला तौलीद जो अक्वलीन सरिशत के खिलाफ़ है मसीह में इस तरह

की पलीदगी हर एक पर दाग़ लगाती है और ये नापाक सरिशत इस बात का सबब है कि इन्सान सोचने की उम्र को पहुंच कर खुद बखुद गुनाह की तरफ़ माइल होता है। और ये एक मुल्क में नहीं हर मुल्क में किसी एक शहर में नहीं हर शहर में किसी एक गांव में नहीं हर एक गांव में बाज़ारों और पोशीदा मकानों में आलीशान मकानों झोंपड़ों में यही हाल है। और इस हालत में हो कर भी अगर कोई अख़लाकी खूबी किसी में पाई जाती है तो वो भलाई की तरफ़ तरक्की करने का सबब है। अलबत्ता ये बात माकूल है कि भलाई की तरफ़ तरक्की करना चाहते हैं और जहां नहीं चाहते वहां बुराई ही को भलाई समझ के उसी को चाहते हैं। मगर ये ख़्वाहिश य़ूही रायगां जाती क्योंकि आखिर इन्सान खुदा के सामने बुराई की ग़बत दिखाता है। अब चूँकि जनाबे मुहम्मद इसी सिलसिले में पैदा हुए और उनके इस तौर से पैदा ना होने का कोई ज़िक्र व सबूत नहीं है लिहाज़ा जनाबे मुहम्मद बज़ाता गुनाह से पाक नहीं हो सकते। और ना थे मुहम्मदियों की तावीलें नाबकार हैं। जब तक अब्दुल्लाह और आमना बेगुनाह ना साबित हों। अगरचे हमें पुख़्ता यकीन है कि मौरूसी गुनाह कुछ चीज़ है और इस का असर नस्ल पर होता है। ताहम इस मौक़े पर इस अम्र की बाबत गुफ़्तगु और अपनी तहकीकात पेश करना मुल्तवी करते हैं और ये गुज़ारिश किए देते हैं कि अगर कोई इन्सान में रूह को उस की इब्तिदा हस्ती से तामर्ग़ गुनाह के असर

मुनकते हो और फ़रिश्ते ने जवाब में मर्यम से कहा कि रूह-उल-कुदस तुझ पर उतरेगी और खुदा तआला की कुदरत का साया तुझ पर होगा। इस सबब से वो पाक लड़का खुदा का बेटा कहलाएगा। गर्ज कि मसीह में पाकीज़गी शुरू ही से कामिल है। वो खुदा बाप से निकल कर दुनिया में आया ना बाप आदम से।

व आलूदगी से मुबर्रा मुअर्रा समझता हो और कहे कि गुनाह सिर्फ़ जिस्म के मुताल्लिक है और एक जिस्मानी या ज़ाहिरी बात है और इसलिए अब्दुल्लाह और आमना के गुनेहगार होने से हज़रत मुहम्मद गुनेहगार नहीं बनते। तो इस से ये नतीजा होगा कि सब इन्सान ऐसे हैं और हज़रत मुहम्मद भी सिर्फ़ उनके मिस्ल एक हैं और बस। और अगर ऐसा ही है तो हर एक रसूल और शफ़ी का इस दुनिया में आना और शोर मचाना फुजूल है।



जनाब मसीह

2. अमलन गुनाह से पाक थे

मसीह कहते हैं कि “तुम में से कौन मुझ पर गुनाह साबित करता है।” (इन्जील शरीफ़ बमुताबिक़ रावी हज़रत यूहन्ना रूकूअ 8 आयत 46) इस से ज़ाहिर है कि वो अपनी बेगुनाही के मुद्दई हैं। पर उन्होंने अपने गुनाहों के लिए कभी दुआ ना मांगी लेकिन औरों के गुनाह माफ़ करते (हज़रत मती रूकूअ 9 आयत 2) और इस कुदरत और सीरत का इस तरह सबूत देते थे “ताकि तुम जानो कि इब्ने-आदम को ज़मीन पर गुनाह माफ़ करने का इख़्तियार है। आपने झूले (लकवे) के मारे से कहा उटो अपनी चारपाई उठा लो और अपने घर चले जाओ।”

जनाब मुहम्मद

2. अमलन गुनेहगार थे

कुर्आन शरीफ़ से साबित होता है (सूरह 91 जुह आयत 7) “और पाया तुझ को भटकता फिर राह समझाई।” ये गुनेहगारी की बड़ी भारी अलामत है। और इस में हज़रत मुहम्मद की पहली हालत का हवाला है। फिर सूरह नस्र की आयत 3 यानी आखिरी आयत यूं कहती है कि “अब पाकी बोल अपने रब की खूबियां और गुनाह बख़्शवा अपने उस से। तहकीक़ वो है माफ़ करने वाला।” इस में गुनाह और गुनेहगार, बख़्शने वाला तीनों मुसर्रह हैं। सूरह फ़त्ह पहली दो आयतें यूं हैं, “हमने फ़ैसला कर दिया तेरे

(आयत 6) औरों को फ़रमाया कि “तौबा करो” पर आप कभी गुनाह के लिए तौबा ना की। औरों को फ़रमाया और हमेशा ताकीद की “तुम्हें सर-ए-नौ पैदा होना ज़रूर है।” मगर ये ज़रूरत अपने ऊपर कभी आइद ना की। और ये सब कुछ इसलिए था कि आप गुनाह से मुबर्रा (पाक) थे। और ऐसी हालतों में पड़ने के मुहताज ना हुए। और इसलिए कि आपके सामईन और नाज़रीन आप में गुनाह साबित ना कर सके बरखिलाफ़ इस के आपके शक्की हवारियों ने आखिर ये गवाही दी कि “तुमने उस कुद्दूस और रास्तकार का इन्कार किया।” (आमाल-उर-रसूल रूकूअ 3 आयत 14) फिर यही गवाह कहता है कि “उसने गुनाह ना किया और उस की ज़बान में छलबल ना पाया गया। वो गालियां खाने के बाद गाली ना देता था और दुख पाके धमकाता ना था बल्कि अपने तई उस के जो रास्ती के साथ इन्साफ़ करता है सपुर्द करता था।” (इन्जील शरीफ़ खत अव्वल हज़रत पतरस रूकूअ 2 आयत 22 व 23) हज़रत पौलूस गवाही देते हैं कि “ऐसा सरदार काहिन (इमाम-ए-आज़म) जो हमारे लायक़ था। जो पाक और बेबद और बेऐब और गुनेहगारों से जुदा और आसमानों से बुलंद है।” (खत-ए-इब्रानियों रूकूअ 7 आयत 26) इसी तरह मसीह का अहवाल और बहूतरे मुक़ामों में मज़कूर हुआ है।

मसीह ऐसा नमूना थे कि जब इन्सान अपने गायत दर्जे की कामिलियत को पहुंचे तो उस के मुवाफ़िक़ होंगे। यूहन्ना रसूल लिखते हैं कि “प्यारो अब हम खुदावंद के फ़र्जन्द हैं और ये

वास्ते सरीह फैसला ताकि माफ़ करे तुझको अल्लाह जो आगे हुए तेरे गुनाह और पूरा करे तुझ पर एहसान अपना और चलावे तुझको सीधी राह।” यहां फिर हज़रत मुहम्मद की पहली गुमराही और गुनेहगारी की निस्बत साफ़ मज़कूर है। और उनके गुनाहों को माफ़ करने के लिए अल्लाह तैयार है। ये तो और इन्सान गुनेहगारों की हालत की सी हालत है। मसीह से इस को क्या निस्बत। चह निस्बत खाक राहा आलम पाक? सूरह मुहम्मद रूकूअ 2 आयत 21 “और माफ़ी मांग अपने गुनाह के वास्ते और ईमानदार मर्दों और औरतों के लिए।” यहां से उम्मत और पेशवा दोनों यकसाँ गुनेहगार साबित हैं। इसी तरह सूरह मोमिन रूकूअ 3 और सूरह तौबा रूकूअ 7 में पढ़ते हैं, “और बख़शा अपना गुनाह और अल्लाह बख़शे तुझको।” इन कौलों मनकूला से ज़ाहिर है कि हज़रत मुहम्मद अमलन गुनेहगार थे। और गुनाह से माफ़ी मांगने के लिए बार-बार हुक्म आया करता था। और इस बात पर हज़रत मुहम्मद का बड़ा खयाल था कि अल्लाह बख़शने वाला है। और इस खयाल में पड़ कर इरादा गुनाह कर बैठे थे। और यूं अपने गुनाह इस की बख़िशश से ढाँपा करते थे। इतनी इबारत या मिस्ल इस के कहीं भी नहीं कि हज़रत मुहम्मद गुनाह से पाक थे। याद रहे कि गुनाह बख़शा जाना और गुनाह से दिल पाक होना दो जुदा चीज़ें हैं। और फ़र्ज किया कि हज़रत मुहम्मद को पहली बात हासिल थी मगर दूसरी बात फिर

अब तक ज़ाहिर नहीं होता कि हम क्या कुछ होंगे। पर हम जानते हैं कि जब वो ज़ाहिर होगा हम तो उस की मानिंद होंगे क्योंकि हम उसे जैसा वो है वैसा देखेंगे।” (खत अक्वल हज़रत यूहन्ना रूकूअ 3 आयत 2) इस बात का खयाल नहीं कर सकते कि वो क्योंकर पाक थे क्योंकि और किसी को पाक नहीं देखते गुनेहगारी हम इन्सानों के लिए एक सहल और आम खयाल है और इसी लिए पाकीज़गी का कामिल नमूना दिया गया कि गुनेहगारों को इस पाकीज़गी की उम्मीद और शौक हो और अंदाज़े कर सकें कि फुलां हद या पैमाने तक की पाकीज़गी कामिल पाकीज़गी है।

गरज़ कि मसीह की पाक ज़िंदगी इन्सान के दिलों पर पूरा असर जमाने वाली है। और हमारे ईमान पुख्ता करने वाली है। और मसीह की ये सीरत उनको लोगों के पेशवाओं पर बदर्जा ऊला तर्ज़ीह देती है क्योंकि वो पाकीज़गी का वाकई नमूना और हकीक़ी सूरत है। और उनकी ये सीरत कुल इन्सानों की पैरवी की मुतकाज़ी है हाँ सिर्फ वही एक रास्तबाज़ है और कोई भी नहीं ऐसे शख्स की पैरवी से सरीहन फ़ायदा है।

भी अपना ज़ोर ज्यूँ का त्यूँ रखती है। यानी उनको गुनेहगार साबित करती है और बख़िशश तो सिर्फ सज़ा का दूर होना है। गरज़ कि हज़रत मुहम्मद की हालत इस अम्र में वैसी ही थी जैसी और इन्सानों की है। जैसे हम तुम और सब अपने गुनाहों की बख़िशश चाहते हैं इसी तरह हज़रत मुहम्मद ने किया। और ज़ाहिर है कि मिस्ल औरों के वो भी एक आजिज़ और गुनेहगार थे। और पाकीज़गी और बख़िशश के मुहताज थे। पस इस हाल में हज़रत मुहम्मद पाकीज़गी और अख़लाक़ का कामिल नमूना नहीं लेकिन इस का एक नाक़िस पैरौ था। और हज़रत तजुर्बा और इल्हाम के इस फ़तवे के ज़ेर हुक़म हैं कि “कोई रास्तबाज़ नहीं एक भी नहीं।” खुदावंद करीम ऐसे शख्सों के पैरोओ को कामिल नमूने की तरफ़ लाए। क्योंकि ऐसे शख्स की पैरवी से किसी गुनेहगार को क्या फ़ायदा है।

कुर्आन के मुतालए से ये बात बिल्कुल साफ़ मालूम होती है कि इस में पाकीज़गी पर चंदाँ ज़ोर नहीं दिया है। सिर्फ़ ज़ाहिरी बातों में से बाअज़ से बचना और बाअज़ को करना दरगाह इलाही में मक्बूल होने के मूज़िब कहे हैं। मगर रूही पाकीज़गी की तरफ़ हज़रत का खयाल कुछ कम मालूम होता है। बल्कि यहां तक कह सकते हैं कि हज़रत इस की माहियत (असलियत) और ज़रूरत से नावाक़िफ़ से मालूम होते हैं। कुर्आन से ये मुसर्रह नहीं कि हज़रत मुहम्मद किसी इन्सान के पाक होने या हो सकने का खयाल रखते हों।

क्योंकि इस में किसी इन्सान को पाकीज़गी मन्सूब नहीं की गई है। हता कि मसीह को भी जो सरासर और हकीकत में पाक था पाकीज़गी का नमूना करके पेश नहीं किया है। इस बात का मुअय्यिद अम्र ये है कि अपने अफ़आल ग़ैर-मुहसिन को बुरा ना समझा बल्कि इनके जवाज़ के लिए रज़ा-ए-इलाही नाज़िल कर लिया करते थे। पस हज़रत मुहम्मद के नज़दीक पाकीज़गी यही थी।

इलावा इस के वो तौर जो हज़रत मुहम्मद ने इख्तियार किए उसे गुनेहगार होने से रोकने वाले ना थे हमारा गुमान है और जो तजुर्बे पर मबनी है कि जब तक इन्सान आजमाईश में ना पड़े अमली गुनाह उस से सादिर नहीं होता और ख्याली गुनाह की शिद्दत का भी कम ज़ेर-ए-बार होता है मगर इस में काबिल-ए-गौर ये बात है कि ख्वाह वो कभी आजमाईश में पड़ा ख्वाह ना पड़ा हो और अगर पड़ कर गुनाह ना किया हो तो फिर जब पड़े और गुनाह करे तो ये बात साबित करेगी कि वो गुनेहगार आदमी है एक गुनाह से उस की सारी सरिशत होगी मसीह ने अपनी ज़िंदगी में ऐसे तौर इख्तियार ना किए जो उस को गुनाह में डालते मगर हज़रत मुहम्मद ने अपनी ज़िंदगी में ऐसे तौर आने दिए कि वो आपको इम्तिहान में पड़ने से रोक ना सकते थे बल्कि उस में डालने वाले थे। कमतरनी की राय में बावा नानक की निस्बत हज़रत मुहम्मद की गुनहगारी ज़्यादा सबूत रखती है मगर यहां तो मुक़ाबला मसीह और मुहम्मद का है। ये क्योंकर बराबर होगा।

माहिरीन-ए-इन्ज़ील मुक़द्दसा जानते हैं कि कि इस में पाकीज़गी मुक़द्दम उसूल है। मसीह ने भी इस को मुक़द्दम बनाया और बाकी सब बातें इस मुद्दआ को बरामद करने वाली हैं।

ये बात सच्च है कि जैसा कि इल्म होगा या जैसी अक्ल की रसाई होगी और जैसा जिसका बातिन होगा वो वैसे ही आमाल ज़ाहिर करेगा इसलिए कुछ अजब नहीं अगर हज़रत मुहम्मद की ज़िंदगी एक गुनेहगार ज़िंदगी ठहरे। और मसीह की ज़िंदगी बेऐब और पाक

अब चूँकि इन दो शख्सों की ज़ाती और अमली हालत ऐसी थी तो उनकी ज़िंदगी भी अपनी अपनी हालत के मुवाफ़िक़ होगी और दोनों में फ़र्क़ होगा। और वो फ़र्क़ ज़ेल की बातों से मालूम हो जाएगा।

दफ़ाअ 2 - इन्सान बसबब गुनाह के अपनी गुफ्तार व रफ्तार में साबित-क़दम और उस्तुवार नहीं हैं क्या जनाबे मसीह और जनाबे मुहम्मद भी ऐसे ही थे।

जनाब मसीह	जनाब मुहम्मद
<p>2. अपनी गुफ्तार व रफ्तार में साबित-क़दम थे</p>	<p>2. अपनी गुफ्तार व रफ्तार में साबित-क़दम नहीं थे</p>
<p>गुफ्तार व रफ्तार में यकसाँ उस्तुवार और साबित-क़दम ही मसीह में आला ख्वाहिशें हमेशा मुक़द्दम और मुसल्लत नज़र आती हैं और कोई बात उनको उनके तरीक़ कायमा से दाएं बाएं नहीं कर सकती। कोई खयाल या नज़ारा नफ़सानियत का उस के पाक इरादे को मग़्लूब नहीं करता उस के लिए आजमाईश पर पड़ना और ना पड़ना बराबर है वो आजमाईश में उस्तुवार (मज्बूत) है। ज़िंदगी-भर में वो किसी बदी के मग़्लूब नहीं हुए। बल्कि इन्सान के दिल की खराबी के बरखिलाफ़ सिखलाना और करना उनका दाइमी और काइमी उसूल रहा</p> <p>(1) हिर्स दुनियावी उस में नापदीद है। जब शैतान ने उन्हें दुनिया की सारी बादशाहतें और उनकी सारी शानो-शौकत दिखलाता है और सज्दा करने के वाअदे पर सब कुछ उन्हें देता है। तो हिर्स दुनियावी उनमें नहीं भटकती। इन चीज़ों के लिए वो मग़्लूब नहीं हो जाता। बल्कि कहते हैं कि “ऐ शैतान दूर हो और खुदावंद को</p>	<p>गुफ्तार व रफ्तार में साबित-क़दम नहीं। अभी कुछ फिर कुछ। और यहां कुछ वहां कुछ और ये काएदे की बात है। कि जब इन्सान में अदना ख्वाहिशें आला ख्वाहिशों पर ग़ालिब होती हैं यानी जब मर्ज़ी या इरादा मग़्लूब होते हैं। और नफ़सानी ख्वाहिशें ग़ालिब तो यही बातें ज़ाहिर करती हैं कि वो इन्सान अपने पर काबिज़ नहीं। और नीज़ उस की आला ख्वाहिशों की कमज़ोरी पर दाल हैं। और ज़िंदगी में अगर किसी वक़्त भी ऐसा वाक़िये हो तो इस का नाम उस्तुवारी और साबित क़दमी ना होगा। बल्कि गुनाह वाली नफ़सानियत और महज़ इन्सानियत का ज़हूर गिरदाना जाएगा। मगर हज़रत मुहम्मद की ज़िंदगी में ऐसी ही बेकियामी है।</p> <p>(1) हिर्स दुनियावी बानी इस्लाम में ये सूरत रखती है, कि दीन के भेस में दुनिया पर मुसल्लत होना बिल्कुल साफ़ नज़र आता है। और इस में ये बात भी पाई जाती है कि इस मुआमले में आप जिस तरह पहले ज़ाहिर हुए</p>

जो तेरा खुदा है सज्दा कर उस अकेले की बंदगी करा” (हज़रत मती रूकूअ 4 आयत 8 ता 10) फिर जब लोग चाहते थे कि आएँ और उसे ज़बरदस्ती बादशाह करें तो आप अकेले पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए। (हज़रत यूहन्ना रूकूअ 6 आयत 15) और बजाए इस के वो ऐसी हिर्स का मग़्लूब हो वो अपनी खिदमत के शुरू से बराबर फ़र्माते रहे और इस बात पर साबित-क़दम है कि “मेरी बादशाहत इस जहान की नहीं बल्कि आस्मानी बादशाहत है।” इन सब तम्सीलों का मुद्दा यही है जो आस्मान की बादशाहत की बाबत फ़रमाई थीं। (देखो इन्जील शरीफ़ बमुताबिक़ हज़रत मती रूकूअ 13) और अपने पैरौओं (मानने वालों) से हमेशा इस बात का मुतकाज़ी हैं कि “अपना इन्कार करो और अपनी सलीब उठाके मेरी पैरवी करो।” (हज़रत मती रूकूअ 16 आयत 46 और भी देखो हज़रत मती रूकूअ 20 आयत 21 ता 28) यहूदी मसीह के मुंतज़िर थे। उस के दुनियावी बादशाह होने के मुंतज़िर थे। (बाइबल मुक़द्दस सहीफ़ा हज़रत ज़करिया रूकूअ 9 आयत 9 और सहीफ़ा हज़रत मीकाह रूकूअ 5 आयत 2) तो ये ख़ूब मौक़ा था कि उनकी इस क़िस्म की इंतज़ारी पूरी हो। यहूदियों का बादशाह होना उनके लिए बहुत सहल था। अगर दुनियावी बादशाहत की हिर्स उस पर ग़ालिब होती मगर। वो मिस्ल इन्सानों के उम्दा और सहल मौक़ा और हालतें देखकर फूल ना उठा। पर अपने त्यों वैसा ही

उस ज़हूर पर कायम ना रहे। मगर तमअ (लालच) दुनियावी ने आख़िरकार अपना ज़हूर दिखाया। मसलन आपका जंग और लड़ाईयां मारनी और अपने पैरौओं (मानने वालों) को भी यही शौक़ दिलाना इस के शाहिद हैं। इस बात में कई एक इन्सानी कमज़ोरियाँ ज़ाहिर होती हैं एक-आध का फिर ज़िक़्र किया जाएगा। बिल-फ़अल मालूम हो कि हज़रत मुहम्मद में ये हिर्स बढ़ती गई और लड़ाईयां और फ़साद करने का हुक्म आता गया। लड़ाईयों के फ़वाइद और सवाब बयान करके इस शौक़ को ख़ूब ज़ाहिर किया। इस को ईमानदारी की अलामत बतलाया। और इस का नतीजा ये हुआ कि आप अरब के बादशाह हो गए। और लड़ाई करना और इस के वो मुहसिन फ़वाइद मुक़ामात ज़ेल से मुसर्रह (साफ़) है। सूरह निसा रूकूअ 10 आयत 72, और रूकूअ 11 आयत 76, सूरह इमरान रूकूअ 14 आयत 140, और रूकूअ 19 आयत 192, और आख़िर जब मुल्क अरब को अपनी हीने-हयात (जीते जी) में फ़त्ह कर चुके तो इस क़िस्म के वसीअ हुक्म दिए गए और ख़राज गीर मुकर्रर हुए। फिर माल-ए-ग़नीमत का हुक्म दिया जैसा दुनिया के बादशाह करते हैं। और आप भी इस में हिस्सादार थे। देखो सूरह अन्फ़ाल आयत 1 और 42, माल-ए-ग़नीमत अल्लाह का है और रसूल का वग़ैरह। ये बातें दुनियावी हिर्स की सरीह अलामतें हैं। अपनी ख़्वाहिश और हिर्स पूरी करने के लिए दूसरों की जान व माल का नुक़सान करना और

जाहिर किया। और करता रहा। जैसा उसने अपने तर्ज एक मर्तबा जताया।

उस को अपने तसर्रुफ में लाना तो वही बात है जो हम अक्सर इन्सानों को करते देखते हैं। पस हजरत मुहम्मद मिस्ल उनके एक है यानी हरीस।

फिर जानना चाहिए कि इस बात का मसीह ने वाकई सबूत दिया कि मैं दुनियावी बादशाह नहीं हूँ। चुनान्चे जब यहूदियों ने जो आने वाले मसीह को एक दुनियावी बादशाह होने की उम्मीद लिए बैठे थे। जब जनाब मसीह ने मसीह मौऊद होने का दावा किया तो उन्होंने उस से एक ऐसा सवाल किया जिससे वो उस के बादशाही मन्सब को जांचें। और सवाल ये था कि आया कैसर को जज़्या देना रवा है या ना रवा? ये बात जनाब मसीह को यहूद की पस्त हालत पर गौरत दिलाने की गर्ज से पेश की गई। मगर मसीह ने उनसे साफ़ फ़रमाया कि कैसर का हक़ कैसर को दो। और ख़ुदा का हक़ ख़ुदा को दो। फिर यह वादा के बादशाहों का एक काम ये था कि काज़ियों का काम करते और फ़त्वा देते थे। सो लोगों ने इस ख़याल से कि अगर ये मसीह बादशाह है तो मिस्ल उन बादशाहों के उनके मुल्की और क़ौमी झगड़े फ़ैसल करेगा। इस गर्ज से उन्होंने चंद एक मर्तबा ऐसे झगड़े पेश किए जैसे ज़ानिया औरत का ऐन फ़ेअल के वक़्त पकड़ा जाना। मगर मसीह ने उस पर फ़त्वा ना दिया और यूं बादशाहों के इस मन्सबी काम से भी इन्कार किया। फिर यहूदाह के बादशाहों का एक काम ये भी था कि लश्कर कशी करते और दुश्मनों के साथ ख़ूनी मुकाबला करते थे। मगर मसीह ने इस बात के बर-ख़िलाफ़ सिखलाया और कहा, जैसा हर नाज़िर अनाजील पर रोशन होगा। सच्च है कि अगर मसीह ये काम करते और ये मन्सब अपने में दिखाते तो वो पुराने बादशाहों के मुवाफ़िक़ एक होते और बस। मगर आपने ऐसा ना किया और अपने त्यों उनसे एक आला बादशाह पेश किया जिसके काम और मन्सब सिवाए मज़कूर के थे।

पस अगरचे मसीह ने दुनियावी बादशाह होने का शौक ना दिखाया और इस बात के लिए ज़रा भी कोशिश ना की ताहम इन्जील मुक़द्दस से जाहिर है कि वो अपने त्यों यहूदियों का बादशाह कहते थे और फ़रिश्ते भी कहा करते थे कि ख़ुदावंद ख़ुदा उस के बाप दाऊद का तख़्त उसे देगा और वो सदा याकूब के घराने की बादशाहत करेगा और उस की बादशाहत आख़िर ना होगी। सो उस की ज़िंदगी से मालूम होता है कि कि उसने बनी-इस्राईल के बादशाहों की मानिंद अपने नाम का सिक्का ना चलाया और ना ज़मीनी तख़्त

पर सफ़राज़ हो कर अदालत की और ना उनके लिए लश्कर कशी की उस के लिए ये कमीनी (हकीर, मामूली) बातें थीं। अगर ऐसा करते तो महज़ मूसा और दाऊद की मिस्ल एक होते। मगर उनका बादशाह होना इलाही तौर पर था। इस तौर पर था जिस तरह खुदावंद यहोवा बनी-इसाईल का बादशाह थे। और मसीह ने वो काम किए जैसे खुदावंद यहोवा बादशाह ने किए। हाँ मसीह ने वो काम किए जो उसे उस इलाही बादशाह के मुवाफ़िक़ ठहराते हैं। अब वो कौनसे काम थे जो यहोवा ने इसाईल का बादशाह हो कर किए और जो दुनियावी बादशाहों के मुताल्लिक़ न छोड़े गए। अक्वल ये कि बनी याकूब को एक क़ौम बनाया और किसी दूसरी क़ौम का शुरु सही तौर से नहीं मालूम हो सकता कि किस से और क्योंकर हुआ मगर क़ौम इसाईल को खुदा ने क़ौम बनाया। और इसलिए इस क़ौम में वो इस नाम से नामज़द हुआ कि अब्रहाम का खुदा इज़हाक़ का खुदा और याकूब का खुदा। ये काम किसी बादशाह इसाईल ने ना किया। बल्कि खुदा ने खुद किया। एक शख्स को चुन लिया और उस से एक बड़ी क़ौम बनाई। दोम, ये कि इस क़ौम को एक शराअ (शरीअत) दी शराअ (शरीअत) बनाना बादशाहों का काम ना हुआ मगर लोगों और बादशाहों के लिए उसने खुद एक क़ानून मुकरर किया। सोम, नादीदनी तौर से उनमें ज़ाहिरा इंतज़ाम करता रहा। सज़ा और जज़ा देना। और उनके ला-हल झगड़ों को फ़ैसल करना वगैरह।

इसी तौर से मसीह ने किया। यही काम मसीह ने किए। और यूं अपने त्यों उन बादशाहों से अफ़ज़ल ज़ाहिर किया। अक्वल उसने एक क़ौम यानी एक कलीसिया बनाई। कुल बनी-आदम के लिए एक नई क़ौमियत खोली। दोम, एक नई शराअ (शरीअत) दी जो इस नई क़ौम के लिए क़ानून हिदायत हो और लोगों और बादशाहों के इख्तियार में ना छोड़ा कि शराअ (शरीअत) बनादें। बल्कि खुद ही एक क़ानून बख़शा कि वो सब उस के मुवाफ़िक़ अमल करें। सोम, वो नादीदनी तौर से ऐसा इंतज़ाम करता रहता कि ज़ाहिरा नतीजे हिदायत और तम्बीह के लिए दिखाता है। कलीसिया को हर तरह तरक्की देता है। बेदीनी को कम करता है वगैरह। पस मसीह दुनियावी बादशाहों के मुवाफ़िक़ अनाबत के काम ना करता था। बल्कि इलाही बादशाह के काम उस के मददे-नज़र थे। मूसा और दाऊद और मसीह के बादशाह होने में यही फ़र्क़ है। मूसा और दाऊद के नायब हो कर बादशाहत करते थे। मसीह नायब नहीं इलाही बादशाह हो कर बादशाहत करते हैं और इसलिए उसने दुनियावी बादशाहों वाले तरीक़ इख्तियार ना किए और ना ये हिर्स उस में जगह पा सकी।

जनाब मसीह	जनाब मुहम्मद
<p>2. अपनी गुफ्तार व रफ्तार में साबित-क़दम थे</p>	<p>2. अपनी गुफ्तार व रफ्तार में साबित-क़दम नहीं थे</p>
<p>(ब) नफ़्सानी शहवत जो इन्सानों पर ग़ालिब होती है। और खुसूसुन आजमाईशों में पड़ते हैं। मगर मसीह में ये बात नापीद है। उनके लिए कोई औरत या औरत की कोई हालत आजमाईश नहीं। हुस्न और बद-सूरती उनके सामने यकसाँ हैं। उन सब को जो उस के बाप (परवरदिगार) की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ चलें वो अपनी माँ और बहनें कहता है। (हज़रत मती रूकूअ 12 आयत 50) औरतों की क्रिस्म से गुफ्तगु करते हुए उस की गुफ्तार व रफ्तार में फ़र्क़ ना आया जिस तरह मर्दों से उसी तरह उनसे भी कलाम करते हैं। मसलन जब सामरी औरत से अकेले में गुफ्तगु करते थे कि जो कोई ये पानी पिए फिर प्यासा होगा। पर जो कोई वो पानी जो मैं उसे दूंगा पिए वो कभी प्यासा ना होगा। अलीख। और इसी तरह अपनी नई बादशाहत की और बातें उस पर ज़ाहिर करीं। (हज़रत यूहन्ना रूकूअ 4 आयत 26) फिर जब और मौक़े पर लोगों से कलाम करते थे तो उनको भी इसी तरह फ़रमाया, “जो मुझ पर ईमान लाता है कभी प्यासा ना होगा।” इसी तरह जब और मौक़ा औरतों से हम-कलाम हुए तो आस्मान की बादशाहत की बातें उनसे कहीं और समझाई और वो जो उस की ये बातें मानती थीं उन्हें प्यार करता था। और नफ़्सानी शहवत के</p>	<p>(ब) नफ़्सानी शहवत जो इंसानों में ज़ाती कह सकते हैं हज़रत मुहम्मद में बेशतर थी हत्ता कि वो इस के हमेशा मग़लूब रहे। सेल साहब कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद मिस्ल और अरबों के, शक़ल ही से औरतों के आशिक़ मालूम होते हैं। और उनकी औरतों और लौंडियों के क्रिस्से जो तारीख़ मुहम्मदी मोअल्लिफ़ इमाद-उद्दीन में मुन्दरज हैं इस की मिसाल हैं। और इस नफ़्सानियत के जवाज़ की कुर्आन में हिदायतें आई हैं। चूँकि इनके बयान से तबइयत ख़राब होती है। इसलिए हम इनका ज़िक़र नहीं करते फिर औरों के लिए चार चार का हुक्म हुआ और अपने सहि चंद रवा रखीं ये ऐसी नफ़्सानियत का बड़ा नमूना है। और बेशतर शहवत का शाहिद है। और इस बात में हज़रत ने ना सिर्फ़ अपनी तालीम की एक गोना अमली मुखालिफ़त की बल्कि खुदगर्ज़ी को ख़ूब साबित किया और शहवत-रानी में आवरों की शहवत की हमवारी ना की। औरों की शहवत को अपने बराबर ना जाना। फिर जिस ढब से ये काम पूरा करते रहे वो बिल्कुल नफ़्सानियत की तदबीरें थीं। हाँ खुदगर्ज़ नफ़्सानियत के और ऐसा करके हज़रत मुहम्मद ने मसीह की तालीम की तह को ना पाया और उस से नफ़्सानी मुखालिफ़त दिखाई। और ना सिर्फ़ खुद ऐसा किया बल्कि पैरों</p>

बरखिलाफ़ ये कायम उसूल पेश किया कि जो कोई शहवत से किसी औरत पर निगाह करे वो अपने दिल में उस के साथ ज़िना कर चुका। (हज़रत मत्ती रूकूअ 5 आयत 28) और आप इस उसूल के दाएं बाएं ना हुए। और ना इस में से कुछ कम किया।

(ज) मसीह की तालीम का शुरू और दर्मियान और अंजाम एकसाँ है। उस की तालीम मौक़ों और हालतों से नहीं बनी अपनी किसी तालीम की निस्बत वो कभी मतईर और पेशमान ना हुए। जो शुरू से सिखाया वही आखिर तक कायम रखा और किसी मौक़ा या हालत की उम्दगी या कबाहत उस के लिए सहूलत या सदद-ए-राह ना हुई। ऐसी उस्तुवारी और साबित कदमी ज़िंदगी और कलाम की पुख्तगी है। पस पेशतर इस से कि मसीह ने अपना काम शुरू किया। और फिर जब शुरू किया तो जानते थे कि इस का अंजाम क्या होगा। और जो काम शुरू किया तो उस के आखिर तक किसी बात में अपने कहे और किए हुए से बाज़ग़शत न करनी पड़ी। अब्बल उनके नए इतिज़ाम के मुताल्लिक़ ये बात थी कि मेरी बादशाहत इस जहान की नहीं। दोम, ये कि उनकी बादशाहत एक रुहानी बादशाहत है। सोम, ये कि मैं सच्य पर गवाही देने आया हूँ। ये तीन उमूर उनकी ज़िंदगी का मुद्दआ थे। और ये उनकी तालीम और अमल को शामिल करते हैं। और इब्तिदा ही से आपने इनका इज़हार किया और कभी दो रंगी ना जाहिर की। पहले अम्र की निस्बत हम

(मानने वालों) को भी सिखलाया। कि औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं वगैरह।

(ज) हज़रत मुहम्मद की तालीम मौक़ों और हालतों से बनती रही और बनी। इस का शुरू और अंजाम एकसा नहीं हुआ। तग़य्युर पज़ीर रही। ऐसी मुतग़य्युर (बदला हुई) तालीम का जब मुअल्लिम की कोना अंदेशी और कमज़ोरी और बे-एतबारी है। ये तो महज़ इन्सानी तरीके हैं। हम इस की चंद नज़रें पेश करते हैं।

(1) मुतबन्ना (गोद लिए) बेटे की जोरू से निकाह करने के शराअ (शरीअत) का मौक़ा और मूजिब ज़ैनब को नंगी देखकर उस पर हज़रत मुहम्मद की शहवत का भड़कना था। अगर ये मौक़ा जिसको आप देखकर सुब्हान अल्लाह पुकार उठे हाथ ना आता तो ये शराअ (शरीअत) कब ईजाद होती। और इस शहवत के जवाज़ के लिए ये शराअ (शरीअत) बनाई जो सूरह अहज़ाब रूकूअ 5 में मस्तूर है। “और जब तू कहने लगा उस शख्स को जिस पर एहसान किया अल्लाह ने और तूने एहसान किया। रहने दे अपने पास अपनी जोरू को और डर अल्लाह से और छुपाता था अपने दिल में एक चीज़ जो अल्लाह उस को खोला चाहता है और तू डरता था लोगों से और अल्लाह से ज़्यादा चाहिए तुझको डरना। फिर जब ज़ैद तमाम कर चुका उस औरत से अपनी गर्ज़ हमने वो तेरे निकाह में दी ता ना रहे सब मुसलमानों को गुनाह निकाह कर लेना जोरूओं से अपने लेपालकों की

पेश्वर भी कुछ बयान कर चुके हैं। और थोड़ा सा और ये है, कि मसीह ने अपनी खिदमत के शुरू ही में। जब शैतान ने उन्हें आजमाया इस अम्र का इज़हार कर दिया। फिर हज़रत यूहन्ना इस्तिबागी को आगाह किया कि मुबारक वो जो मुझमें ठोकर ना खाए। हज़रत यूहन्ना के लिए ये नया रुहानी इंतज़ाम एक नई बात मालूम हुई और इस सबब से उस को मसीह की सच्चाई की निस्बत कदरे शक गुज़रा तो मसीह उस को समझाता है कि मुझमें ठोकर ना खाना। यानी मेरी बादशाहत को दुनियावी बादशाहत ना समझना। और और मौकों पर भी बराबर इस यहूद की गलती को दुरुस्त करते रहे। फिर उनकी तम्सीले आस्मानी रुहानी बादशाहत की बाबत हैं और उनकी बढ़ती मज़हर हैं। और दुनियावी बादशाहत बिल्कुल खारिज है। फिर देखो जब मौत के लिए गिरफ़्तार किए गए उस वक़्त भी फ़रमाया कि :-

मेरी बादशाहत इस दुनिया की नहीं। अगर मेरी बादशाहत इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम लड़ाई करते। ताकि मैं यहूदियों के हवाले ना किया जाता पर मेरी बादशाहत यहां की नहीं है। (इन्जील शरीफ़ बमुताबिक़ हज़रत यूहन्ना रूकूअ 18 आयत 36) इस बयान से बाअज़ लोगों को वहम कि मसीह ने जब दुनियावी बादशाह होने में कामयाब ना हुए तब ये तरीक़ इख़्तियार किया था बिल्कुल रद्द होता है। बर-ख़िलाफ़ इस के अगर मसीह कभी भी ऐसी कोशिश करते तो वो जो अपने काम और कलाम

(बीवियों से) जब वे तमाम कर चुके उनसे अपनी गर्ज़।” पस अपनी शहवत और लोगों के ख़ौफ़ ने ये शराअ (शरीअत) बनवाई।

(2) आप तो अक्वल सिर्फ़ दीन के वाइज़ थे। और शायद लड़ाई का कुछ खयाल भी ना था। मगर कुछ अर्से ऐसे ही रह कर आखिर दीन के जंगी पहलवान बन गए। और ये नौबत उस वक़्त पहुंची जब कुछ पैरों (मानने वाले) हाथ आ गए। और देखा कि तकरीर से काम नहीं चलता और लोग मुखालिफ़त करते हैं। और इस के साथ मुल्कगीरी की हिर्स ने जोश मारा। मगर शुरू ही में ऐसा ना किया। पस ये बात भी आप की गुफ़्तार और रफ़्तार की रंगा-रंग हालत का सबूत है।

(3) रुख नमाज़ की निस्बत कई बार तब्दीलियां हुईं। और आप एक बात पर कायम ना रहे। देखो एक मर्तबा कहा कि “अल्लाह की ही मशरिक और मगरिब। सो जिस तरफ़ तुम मुंह करो। (वहां ही मुतवज्जोह है अल्लाह) (सूरह बकरह रूकूअ 14 आयत 115) फिर इसी सूरह के रूकूअ 17 में आपकी बेकरारी का अहवाल पाया जाता है “हम देखते हैं फिर-फिर जाना तेरा मुँह आस्मान में सौ अलबत्ता फेरेंगे तुझको जिस क़िब्ले की तरफ़ तू राजी है। अब फेर मुँह अपना मस्जिद-उल-हराम की तरफ़ और जिस जगह तुम हुआ करो फेरो मुँह उसी की तरफ़ अलीख।” इस तब्दीली का सबब ये था कि यहूदियों की तरफ़ से आपकी उम्मीद मुनक़ते

की शौहरत के औज पर थे बिल्कुल कामयाब होते। और इसके साथ ये भी याद रहे कि मसीह ने यहूदियों की मुखालिफत और ज़िद को हल्का करने या उनकी पास खातिरी करने के लिए भी अपनी इस तालीम को ना बदला और ना गैर किस्म या उस के मुखालिफ तक्ररीर या तदबीर इख्तियार की। बल्कि उसी पर कायम रहे वही सच था और मसीह सच पर गवाही देने आए थे। (हज़रत यूहन्ना रूकूअ 18 आयत 37)

इसी तरह आपने दुसरे अम्र को इब्तिदा ही से कायम रखा और उस पर साबित-क़दम रहे। उस के इसरार और खूबियों का बयान किया। और इस बात की परवा ना की कि कोई उस की रुहानी बादशाहत की बातें मानेगा या नहीं। (हज़रत मती रूकूअ 15 आयत 12) और इस लिहाज़ से इस में या लोगों की खातिर इस में इस किस्म की सहूलत या तब्दीली कर दी हो। नहीं बल्कि जैसा इस बादशाहत की निस्बत हक़ था इस हक़ पर गवाही दी। वो तालीम जो आपने पहाड़ पर फ़र्माई साफ़ साबित करती है कि उस के अजज़ा आस्मानी और रुहानी बादशाहत के ज़ाबते हैं। ना कि दुनियावी बादशाहत के। जो मुरीद आप ने अपनी इस बादशाहत के फैलाने के लिए चुने वो शाहाना और मुल्की सामान ना रखते थे। बल्कि ग़रीब और हक़ीर और कमज़ोर थे। और ऐसे शख्सों को साथ लेकर हरगिज़ ना पछताए। और उनको कैसर या पिलातूस के ज़ाबते ना सिखलाए ताकि आपकी बादशाहत के लायक़ रुक्न बन जाएं।

हुई तो वो मीलान जो उनके क़िब्ला यानी यरूशलम की तरफ़ था अब इस तरफ़ से हट कर अरबों के क़िबले की तरफ़ ग़ालिब हुआ। और कुर्आन खुद ही कहता है कि “मुहम्मद इस अम्र में चकरा रहे थे। कभी इधर उधर ग़र्ज़ कि यहूद की खातिर यूं था और अरबों की खातिर कुछ और हो गया। देखो किस बात पर डोल गए।

(3) जैसी गुज़िश्ता ज़िक्र से आपकी लगर्श ज़ाहिर हुई। डाक्टर मेरूर साहब लिखते हैं कि एक मर्तबा हज़रत मुहम्मद ने लोगों की खातिर उनके इलाहों (खुदाओं) को कुबूल किया और जब कुरैश काअबे के नीचे बैठे थे आपने सूरह 53 यानी नज्म उनके सामने पढ़ना शुरू कर दिया। और कहा तुम नहीं देखते लात और उज्जा और मनात तीसरा पिछला ये आली मोमनतें हैं और यक़ीनन इनकी सिफ़ारिश की उम्मीद रखनी चाहिए। इस इजाबत से सब राज़ी हो गए और हज़रत मुहम्मद के खुदा के आगे सज्दा किया। मगर अंदर से उनका दिल मारता था। और बादअज़ां बहुत जल्द पिछली बातें जिब्राईल ने बाज़ तलब कीं। कि शैतान की तरफ़ से थीं। मास्टर रामचन्द्र ने भी तहरीफ़ कुर्आन में मुफ़स्सिल बहस करके इस बात को तमाम किया है। और इस के एवज़ ये दिया कि क्या तुमको बेटे और उस को बेटियां। तो ये बाँटा भंडा। ये सब नाम हैं जो रख लिए हैं तुमने

लेकिन आस्मानी बादशाहत की बातें सिखाईं। और हर तरह से उस के लायक किया गई कि इस अम्र में भी मसीह की यकसानी ज़ाहिर है। तीसरा अम्र आपके हर कलाम व काम को शामिल करना है जिसमें ये बातें भी हैं कि जब एक मर्तबा कोई तालीम दी तो उस से ना फिरे और ना उस को बदल कर कुछ और सिखाया। मगर एक ही वही तालीम रखी और दूसरी बात ये है कि जैसा सिखाया उस के मुताबिक़ खुद अमल किया। किसी किस्म की हालत उस को तामील तालीम से आजिज़ ना कर सकी। आपकी तालीम का मजमूआ जो इन्जील शरीफ़ बमुताबिक़ हज़रत मत्ती रूकूअ 5 व 6 व 7 में मर्कूम है गौर से और दिल से देखने के लायक है। इस को देखो और मसीह की ज़िंदगी का मुलाहिज़ा करो और कहो कि उस में यकसानी और उस्तुवारी है या नहीं। और तहकीक़न यही बात क़ायम होगी कि जो कुछ आपने एक बार फ़रमाया वो यूँ फ़रमाया ज्यूँ कोई आलिमुल-ग़ैब फ़र्मा दे। ऐसा सिखाया कि कुछ कमी बेशी की हाजत व नौबत ना पहुंची। और सिर्फ़ यही नहीं। देखो आपने इस तालीम का कैसा कामिल बर्ताव दिखाया है बदी की आजमाईशें आपको मग़्लूब ना कर सकीं। वो हर किस्म के लोगों से मिलते और उनसे कलाम करते थे।

बाज़ारों और घरों में वीरानों और आबादियों में। दरियाओं और पहाड़ों पर अकेले में दुकेले में मजलिसों में। और ये नहीं कि कहीं अलग गोशा नशीन हो कर बैठे रहे और दुनिया से सरोकार

और तुम्हारे बाप दादाओं ने। यहां से हज़रत मुहम्मद का लगर्श खाना और भी ज़ाहिर है।

इलावा इस के वो सब बातें जो कुर्आन में नासिख और मन्सूख वाक़ेअ हुई हैं। इस बात को साबित करती हैं कि हज़रत मुहम्मद का दीन हालतों और मौकों से बना था। और साबित क़दमी मादूम है। और ज़ाहिर है कि आपका तरीका फिर भी हर मुल्क और हर इन्सान के शामिल-ए-हाल नहीं। ता हनुज़ इस में बहुत बातें हैं जो तर्मीम तलब हैं। क्योंकि बाअज़ उनमें से हकीक़तों के ख़िलाफ़ हैं और बाअज़ सदाक़तों के अगर 25 बरस और पैग़म्बरी करते तो शायद ये नुक़स जाते रहते। लेकिन जहां तक और जिस तरह रद्दो-बदल का ज़हूर है और आपके कामिल और साबित-क़दम होने के बरख़िलाफ़ एक ज़िंदा सबूत है। और आपकी ये क़बीह सीरत काबिल नमूना नहीं है। ऐसा तो इन्सानों में हुआ करता है। देखो बाबू केशव चंद्रसेन का हाल अब तक उनके ब्रहमो समाज के उसूलों में क्रियाम नहीं। कांट छांट होती चली जाती है। हज़रत मुहम्मद की ज़िंदगी की रंगा-रंगी का एक सबब ये भी था। कि आपका इल्म बाहर से था। मौकों और हालतों ने उस को सिखाया कि अब यूँ कहो फ़िरूँ अब कह दे फिर बदल दे। और इसलिए वो एक बात हर हालत के लिए ना कह सका और अज़ आन मूजिब अमल भी ना किया। गई कि इस अम्र में भी हज़रत मुहम्मद मिस्ल गुनेहगारों के गुफ़्तार व रफ़्तार में साबित ना थे। एक भूलता भटकता इन्सान था।

ना रखा और इसलिए किसी आजमाईश में ना पड़े। वो पाक ज़ात और कामिल सरिशत ख्वाह कहीं होती ग़लती और गुनाह और दीगर इन्सानी कमज़ोरियों से बरी रहती। और ऐसा ही हुआ। जब आपने सिखाया कि शहवत से किसी औरत की तरफ़ निगाह ना करना तो खुद भी इस बात से बरी रहे। और कभी शहवत का मग़्लूब हो कर इस का हुक्म ना बदला। और ना इस में से कुछ कम किया। अगर आपने सिखाया कि इब्तिदा में खुदा ने एक मर्द और एक औरत को जोड़ा किया। तो फिर लोगों का लिहाज़ ना किया और ना उनके नफ़्सानी ग़लबों की रिआयत की और ना उनकी सख़्त दिली से डोल गए बल्कि वही बराबर कायम रखी अगर आपने कहा कि दुश्मनों को प्यार करो तो कभी इस के बरख़िलाफ़ अमल ना किया। अगर आपने सिखाया कि एक खुदा की रूह व रास्ती से परस्तिश करो तो दूसरों के माबूदों को इज़ज़त ना दी। अगर आपने सिखाया कि दिल के ग़रीब और हलीम हो। तो आपने कभी जुल्म व गुरूर ना किया और ना ऐसी तर्गीब दी। उस पर मुहब्बत ने दुख व रंज उठाकर भी इस सीरत को अपने में ज़ाए ना किया। वग़ैरह इस मोअख़्खर-उल-ज़िक्र अम्र की ज़्यादा तफ़सील दफ़ाअ ज़ेल आती है मसीह में ऐसे औसाफ़ कामिला का ये सबब था, कि आपका इल्म अपने बातिन से था। मौक़ा और हालतें और तबीयतें आपकी उस्ताद ना थीं। बरअक्स इस के आपकी कोशिश इस बात के लिए थी कि वो

हालतें और तबीयतें जो इंसान की ज़िंदगी में रद्दो-बदल की मूजिब हैं उस की तालीम के साँचे में ढाली जाएं। पस मसीह हर बात में कामिल और साबित-क़दम थे।

تلك الغرائق العلی ربان شفا عتھن لیر تجی
 इस का तर्जुमा बमूजब मास्टर राम चन्द्र
 साहब के यूँ है “ये निहायत नाज़ुक और नौजवान औरतें आला मर्तबे की हैं। और इनकी
 शफ़ाअत की उम्मीद करनी चाहिए।” (अज़ तहरीफ़ कुर्आन तस्नीफ़ मास्टर राम चन्द्र देहलवी
 साहब दफ़ाअ 173 सफ़ा 190)

दफ़ाअ 3 - इन्सान एक दूसरे के बद-ख्वाह और मुखालिफ़ होते हैं क्या मसीह और मुहम्मद भी ऐसे ही थे

अख़लाक की किताबें देखने से और दुनियावी रिवाज और क़वानीन से भी यही मालूम होता है कि कोई नाजायज़ या नाशाइस्ता या रंज पहुंचाने वाली बात या हमला करना। करने वाले को मअयूब (एब वाला) ठहराना और इन हालतों में वो जो मामूल होता है यानी जिसके बरखिलाफ़ या जिस पर ये उमूर वारिद किए जाते हैं। वो अपने बचाओ करने का मुस्तहिक़ गिरदाना जाता है और ऐसे रंज रसीदों का हक़ पहुंचाने के लिए कोशिश की जाती है। अख़लाकी फ़ल्सफ़ा और मुल्की फ़ल्सफ़ा इस बात की हामी और मुअय्यिद नज़र आती हैं। सेल्फ रिस्पेक्ट यानी तौकीर नफ़सी। और सेल्फ डीफेंस यानी हिमायत नफ़सी लोगों के मुँह पर चढ़ा हुआ है। और इन्सान चाहते भी हैं कि ऐसा ही होए हर एक को ये ख्वाहिश होती है कि अपनी इज़्जत और बचाओ के लिए कोई मुखालिफ़ तदबीर करे और इस हालत में कहते हैं कि ये बातें खुदगर्ज़ी और बदख्वाही में दाखिल नहीं हैं लेकिन हमारी कुदरती सरिशत का तकाज़ा है कि हम ऐसा चाहें और करें। मगर इस मुआमले में कमतरिन समझता है कि ये ग़लत बात है। क्योंकि ये हमारी असली सरिशत का तकाज़ा नहीं। इल्ला इस मौजूदा हालत में हमको अपनी ये कार्रवाई पसंदीदा मालूम होती है और हम इनकी बड़ाई करते हैं। क्योंकि ये हमारी वो सीरत और सूरत नहीं जो अस्ल में थी और अगर वही हालत कायम होती तो इन लफ़्ज़ों को कौन ईजाद करता। इनकी सना का मौक़ा ही ना मिलता। अगरचे ये अम्र इन्सान के लिए अज़हद मुश्किल हो। ताहम यही अम्र है। जो इन्सान के दिल में पूरे क्रिस्म की ख़ैर ख्वाही और हलीमी को बहाल कर सकता है। और जब तक किसी के दिल में इतना भी खयाल व गुमान व गुरूर है तो वो हस्ती कामिल नहीं हो सकती और इन्सान की कामिल हालत की ये वाजिबी सूरत बयान ज़ेल में दिखलाई जाती है।

जनाब मसीह	जनाब मुहम्मद
<p>किसी के बदखाह और मुखालिफ़ नहीं थे</p>	<p>बदखाह और मुखालिफ़ थे</p>
<p>मसीह खैर ख्वाही और हलीमी में बेनज़ीर नमूना हैं ये वस्फ़ इन्सान में बहुत ही कम होती है। बनी-आदम अक्सर ऐसा काम और कलाम करते हैं जिसमें अपनी ही खैर मद्दे-नज़र होती है। औरों से नेकी और मुहब्बत करना इन्सान में एक इतिफ़ाकी बात है। मगर मसीह में ये ख़ूबी मकदूम है। और वो लोगों की मुखालिफ़त के सबब या अपने बचाओ के लिए इस ज़ाती सीरत को ज़ाए नहीं करते और इस बात में हमेशा साबित-कदम रहे। उस में बद ख्वाही और खुदगर्ज़ी की बू तक नहीं। ये अजीब शख्स है जो दुनिया में और ऐसी दुनिया में रह कर सरासर हलीम और खैर-ख्वाह रहा देखो इस अम्र में उनके बातिन से कैसी तालीम निकली। ये फ़रमाया कि “ज़ालिम का मुकाबला ना करना बल्कि जो तुम्हारे दहने गाल पर तमांचा मारे। दूसरा भी उस की तरफ़ फेर दो वगैरह (हज़रत मती रूकूअ 5 आयत 39) “अपने दुश्मनों को प्यार करो। और जो तुम पर लानत करें उनके लिए बरकत चाहो। और जो तुमसे कीना रखें उनका भला करो। और जो तुम्हें दुख दें और सताएं उनके लिए दुआ करो ताकि तुम अपने परवरदिगार के जो आस्मान में है फ़र्ज़न्द हो। क्योंकि वो अपने सूरज को बंदों और नेकों पर उगाता है और रास्तों और नारास्तों पर मेह</p>	<p>हज़रत मुहम्मद यक-तरफ़ा और खुद-गर्ज़ खैर ख्वाही अल-माअरूफ़ है। ये वस्फ़ इन्सान में आम है। और अगरचे कभी कभी ऐसा हो जाता है कि कोई शख्स बड़ा खैर ख्वाह नज़र आता है ताहम वो खैर ख्वाही किसी वक़्त या मौक़े पर बद-ख्वाही और खुद-गर्ज़ी से बदल जाती है और ये हालत ज़ाहिर करती है कि इस शख्स में भी ये सीरत कायम व दायम नहीं है। हज़रत मुहम्मद की तालीम और काम ज़ाहिर करते हैं कि वो ऐसे शख्स के मुवाफ़िक़ भी ना थे। बल्कि मिस्ल और इन्सानों के उस में भी यक-तरफ़ा और खुद-गर्ज़ी खैर-ख्वाही थी। अलबत्ता कभी कोई कार-ए-खैर हो गया तो हो गया और वो भी अपने रिश्तेदारों और दोस्तों और खुसूसुन अपनी औरतों के हक़ में। इस अम्र पर आपकी की तालीम ये है। (सूरह बकरह रूकूअ 24) “लड़ो अल्लाह की राह में उनसे जो लड़ते हैं तुमसे और मार डालो उन्हें जिस जगह पाओ। और निकाल दो जहाँ से उन्होंने तुमको निकाला। और दीन से बिचलाना क़त्ल करने से ज़्यादा है। और लड़ो उनसे जब तक बाकी ना रहे फ़साद और हुक्म रहे अल्लाह का। फिर जिसने तुम पर ज़्यादती की। तुम उस पर ज़्यादती करो जैसे उसने ज़्यादती की तुम पर।” ये हज़रत मुहम्मद की तालीम है और इतिफ़ाक़न मुँह से</p>

(पानी) बरसाता है। अगर तुम उन्हीं को प्यार करो जो तुम्हें प्यार करते हैं तो तुम्हारे लिए क्या अज़्र है। क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते और अगर तुम फ़क़त अपने भाईयों को सलाम करो तो क्या ज़्यादा किया? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते पस तुम कामिल हो जैसा तुम्हारा परवरदिगार जो आस्मान पर है कामिल है।” (हज़रत मती रूकूअ 5 आयत 43 ता 48) “अगर तुम आदमियों के गुनाह बख़शोगे तो तुम्हारा परवरदिगार भी जो आस्मान पर है तुम्हें बख़शेगा।” वगैरह (हज़रत मती रूकूअ 6 आयत 14 व 15)

देखो इन बातों को मसीह ने कामिलियत का और खुदा की सूरत पर बहाल होने का सामान ठहराया। उस में बदखवाही और खुदगर्ज़ी और खून करना वगैरह कहाँ रहा। बेशक इन्सान के लिए ये मुश्किल बातें हैं। और इस की मौजूदा हालत इनको कुबूल नहीं करती। हाँ इनका होना इन्सान में ना-मुम्किन समझा जाता है। मगर मसीह ने इस अक्दह को हल किया इस मुश्किल को आसान किया क्योंकि आप पाक सीरत थे। तो भी इन्सान के लिए ये बातें क्यों अनहोनी और मुश्किल सी मालूम होती हैं जो इसी लिए कि इन्सान इस कामिल रुहानी हालत पर नहीं जो खुदा के मुवाफ़िक़ थी। पस चूँकि उसी हालत पर बहाल होना इन्सान की रुहानी तरक्की की गर्ज़ होनी चाहिए। लिहाज़ा ये तालीम काबिल है कि हमको वो बात हासिल कराए। मसीह में सिर्फ़ तालीम की उम्दगी नहीं मगर बेशतर

निकल गई लेकिन इस मुक़दम तालीमों में से एक है और बार-बार ऐसा ही सिखाया है। अब इस में तकरीबन सब ही बातें बुरी हैं। दुश्मन को क़त्ल करना। बदला लेना। खुदगर्ज़ी और बदखवाही सब ही इस में पाई जाती हैं और इसी तरह और मुक़ामों में है कि गैरों को रफ़ीक़ ना करें उनसे मुहब्बत ना करें। और अदम मुहब्बत बद-खवाही से वाक़ेअ होती है। सूरह माइदा रूकूअ 8 में है, “ऐ ईमान वालो मत पकड़ो यहूद और नसारा को रफ़ीक़।” ये मुहम्मद के दिल का खुबस था। और इस में ज़्यादातर बुरी बात ये है कि आप ऐसा ही अमल में लाए। इस अमल में आपने अपने कहे कि मुताबिक़ ख़ूब अमल दिखाया। इस मुख़्तसर में आपकी लड़ाईयों का मुफ़स्सिल अहवाल दर्ज नहीं हो सकता है। और दर्ज क्या करूँ जो नाज़रीन माहिरीन को ना मालूम हो। इसलिए सिर्फ़ ये अर्ज़ है कि डाक्टर म्यूर साहब की लाइफ़ आफ़ मुहम्मद और मिस्ल इस के औरों की तस्नीफ़ात का मुतालआ किया जाये। इनमें हज़रत की इस कारगुज़ारी की पूरी पूरी कैफ़ीयत मौजूद है। मीज़ान-उल-हक़ बाब तीसरा फ़स्ल चौथी को भी देखना चाहिए इस में थोड़ा सा बयान इस बात का पाया जाता है। और अगर फ़ुर्सत ना हो सके तो इस बात का ख़याल रखना चाहिए। कि अक्सर जहां कहीं मुन्किरों वगैरह से लड़ाई का हुक़म और तर्गीब है या फ़त्ह की तारीफ़ हुई है। तो किसी ना किसी ख़ूरेजी या झगड़े के बाद का हुक़म और उस की यादगार है। मसलन जब

इनकी रफ्तार में है। देखो जब मुखालिफों ने उनके गाल पर तमांचे मारे तो आप ने इन ज़ालिमों का मुकाबला ना किया। बल्कि दूसरे को भी सदमा सानी के लिए गोया दे दिया। जब लोग कीना और दुश्मनी के तौर दिखा रहे थे और कत्ल करने पर आमादा थे तो वो उनके लिए दुआ करते हैं कि “ऐ परवरदिगार उन्हें माफ कर क्योंकि वो नहीं जानते कि क्या करते हैं।” (हज़रत लूका रूकूअ 23 आयत 34) आपने उनके गुनाह बख़्शे और बदी का बदला लेने के बजाए उनके बीमारों को शिफा बख़्शी। उन के भूकों को खाना खिलाया। उनके मुर्दों को जिलाया। सबको जो ग़लतफ़हमी और गुमराही में थे सिखाया। जब आपके हवारी ने आपकी खातिर तलवार चलाई और मुखालिफों में से एक का सिर्फ कान ही काटा था उस को आपने बंद कर दिया और फ़रमाया। अपनी तलवार मियान में कर लो और उस शख्स के कान को शिफा बख़्शी। वो इन्सान की गुनेहगारी पर गर्दनकश के लिए रंजीदा खातिर होते थे। हाँ इन्सान की इस हालत के लिए वो रोय आहें खींचीं क्योंकि इन्सान की मौजूदा हालत खुदा के हुज़ूर खतरनाक है उसने अपनी इज़्जत और बचाव को कामिलियत के अजज़ा ना गिरदाना बल्कि अपनी ज़िंदगी से इनको खारिज किया। और दिखा दिया कि ये बातें भी रूहानियत और कामिलियत में शामिल नहीं हैं। हाँ उस के तौर खुदाई तौर थे। आओ हम भी ऐसे हम्दर्द मुंजी (नजात-दहिंदा) के पास चलें ताकि अपने दर्द

अबू सुफ़ियान ने मदीना पर चढ़ाई की तो उस के गिरोह ने एक यहूदी गिरोह को जो बनी कुरैज़ा कहलाता था। तर्गीब देकर हज़रत मुहम्मद की तरफ़ से हटा दिया। क्योंकि इस से पेशतर ये गिरोह हज़रत मुहम्मद के खौफ़ के सबब हज़रत मुहम्मद के साथ ज़ाहिरी रिफ़ाक़त किए हुए थे। तिस पर भी बनी कुरैज़ा अबू सुफ़ियान के हमले में हज़रत मुहम्मद के मुकाबले में शरीक ना हुए थे बल्कि अलग खामोश रहे थे और जब ये शख्स लौट गया तो हज़रत मुहम्मद ने बनी कुरैज़ा के साथ सख़्त सुलूक किया यानी उनके आठ सौ शख्स बैठे बिठाए को अपने सामने कत्ल करवा दिया। और दिल में ज़रा तरस ना खाया। हज़रत मुहम्मद उनको उस जगह से खारिज कर सकते थे ताकि इस ज़ालिमाना खूरेज़ी की जगह ना होती। मगर उस पर हक़ नाहक़ खून सवार था और उनको जीता न छोड़ा और अपने में इस मौक़े के लिए मर्हबा कहा, देखो सूरह 33 यानी अहज़ाब आयत 22 व 27 ये उज़्र पर लोच है कि हज़रत मुहम्मद ने अपने बचाओ के लिए या बदला लेने की गर्ज़ से ऐसा सिखाया और किया और इसलिए बुरा ना किया। ऐसी ही नीयत और इस का अमली ज़हूर और ऐसी ही खुदगर्ज़ियाँ दुनिया में तमाम फ़सादों की जड़ हैं। और आपने भी वही चाल दिखाई। तो भी वो इलावा इस के वाज़ेह रहे कि हज़रत मुहम्मद के जंग और खून सिर्फ़ अपने बचाओ की हालत में ना होते लेकिन अपने बचाओ के लिए और कभी यूँही हमला

गुनाह की दवा पाएं। अब खयाल करो ऐ नाज़रीन कि अगर कुल बनी-आदम इसी तरह खैर ख्वाहां हो तो बद-ख्वाह कौन होगा? अगर सभी दुश्मनों को प्यार करें तो दुश्मन कौन होगा? कौन जाने कि मैं दुश्मन को प्यार करता हूँ या दोस्त को? अगर सभी मार खाने वाले हों या बनें तो मारने वाला कौन होगा? अगर हर एक हलीम हो तो ज़ालिम कोई ना रहेगा। अगर कुल दुआ गो हों तो लानत करने वाला कौन होगा? दूंदे ना मिलेगा अगर सब ही गाली खाने वाले हो जाएं। तो गाली देने वाला मादूम होगा। गर्ज़ कि दोनों किस्मों में से कोई भी ना होगा। और आदमज़ाद की वो हालत हो जाएगी। इसी आराम और मुहब्बत में चैन करें जिसमें खालिक ने इन्सान को पैदा किया था। और जो इन्सान की असली कुदरती हालत थी। मसीह वो नमूना है जिससे दुनिया अपनी बद आदतों से छुट कर खुदावंद खालिक के हुज़ूर पसंदीदा ठहरे। हाँ इस नमूने के मुताबिक अमल करने से तमाम बद ख्वाहियाँ और खुद गरज़ियाँ दफ़ाअ होती हैं। और वो तमाम क़वानीन ताज़ीरात जो दुनिया में मुरव्वज हैं बे-असर होती हैं और हम अपने ही अहद में इस अहद को देखें जिसकी खबर यूँ है कि आखिरी दिनों में वो अपनी तलवार को तोड़ के फाले और अपने भालों के हसिये बना डालेंगे और क्रौम क्रौम पर तलवार ना चलाएगी और वो फिर कभी जंग ना सीखेंगे (हज़रत यसअयाह रुकूअ 2 आयत 1 ता 4) पस ऐसे खैर-ख्वाह और हम्दर्द को छोड़कर किस ज़ालिम

करने की गर्ज़ से। और कभी माल-ए-ग़नीमत हासिल करने के लिए फुतूहात पर कमर-बस्ता होता था। और इन सब कामों की कुर्आन में खूब तारीफ़ की गई है। इस बयान से ज़ाहिर है कि मसीह से मुहम्मद को कुछ निस्बत नहीं। वो खैर-ख्वाही और रहम दिली का नमूना है। और मुहम्मद खूरेज़ी और बद-ख्वाही और गर्ज़ का नमूना है। हाँ हम इतना मान सकते हैं कि दोनों नमूने अपने अपने दायरे और किस्म में कामिल नमूने हैं। मगर क्या मुहम्मद की तालीम और नमूना दुनिया को चैन व आराम दे सकता है। नहीं हरगिज़ नहीं। क्या आगे ऐसे नमूने दुनिया में कुछ कम थे।... नहीं क्या ऐसे शख्स के नक़शे क़दम पर चलने से रुहानी तरक्की हो सकती है नहीं। इस तरह तो हम अपनी रुहानी और इन्सानी मंजिलत व फ़ज़ीलत को खुद ही ज़लील और बदनाम करते हैं। ऐ अहले-इस्लाम तुम क्यों नहीं सोचते? सोचो और फ़िरो। अब तो लोगो।

और बेदर्द के पीछे जाएं? यही मसीह हमारे
लायक मुंजी (नजात-दहिंदा) है।



दफ़ाअ 4 - इन्सान फ़रेब देते और फ़रेब खाते हैं क्या मसीह और मुहम्मद भी ऐसे ही थे

जनाब मसीह	जनाब मुहम्मद
<h3>4. शैतान के फ़रेब में नहीं आए</h3>	<h3>4. शैतान के फ़रेब में आए</h3>
<p>इन्जील मती रूकूअ 4 में मसीह का शैतान के फ़रेब में ना आना मस्तूर है। तब सय्यदना ईसा रूह की हिदायत से ब्याबान में गए ताकि शैतान उन्हें आज़माए और जब चालीस दिन रात रोज़ा रख चुके आख़िर को भूके हुए। तब आज़माईश करने वाले ने आपके पास आ कर कहा कि अगर तुम इब्ने-अल्लाह हो तो कहो कि ये पत्थर रोटी बन जाये आपने फ़रमाया लिखा है कि इन्सान सिर्फ़ रोटी से नहीं बल्कि हर एक बात से जो खुदा के मुँह से निकलती है जीता है। तब शैतान आपको मुकद्दस शहर में साथ ले गया और बैतउल्लाह के मुंडेर पर खड़ा करके आपसे कहा अगर तुम इब्ने-अल्लाह हो तो अपने त्यों नीचे गिरा दो क्योंकि लिखा है वो तुम्हारे लिए अपने फ़रिश्तों को फ़र्माएगा कि तुम्हें हाथों पर उठा लें ऐसा ना हो तुम्हारे पांव को पत्थर से ठेस लगे। सय्यदना ईसा ने उस से फ़रमाया ये भी लिखा है कि तू खुदावंद को जो तेरा खुदा है मत आज़मा। फिर शैतान आपको एक बड़े ऊंचे पहाड़ पर ले गया और दुनिया की सारी बादशाहतें और उनकी शानो-शौकत उसे दिखाए और कहा अगर तुम झुक कर मुझे सज्दा करो तो ये सब कुछ तुम्हें दूंगा।</p>	<p>सूरह हज रूकूअ 7 में शैतान से फ़रेब ना खाने का ये उज़्र मस्तूर है, “और जो रसूल भेजा हमने तुझसे पहले या नबी सो जब खयाल बाँधते शैतान ने मिला दिया उस के खयाल में फिर हटाता है शैतान का मिलाया। फिर पक्की करता है अपनी बातें इस वास्ते कि एक शैतान के मिलाए से जांचे उनको जिनके दिल में रोग है और जिनके दिल सख्त हैं और गुनेहगार तो हैं मुखालिफ़त में दूर पड़े और इस वास्ते कि मालूम करें जिन्हें समझ मिली है ये तहकीक़ है तेरे रब की तरफ़ से फिर इस पर यकीन लाएं और वहीं उनके दिल।”</p> <p>ये इस तारीफ़ होने के लिए उज़्र किया जिसका हम पहले दफ़ाअ 2 में ज़िक्र कर चुके हैं। आपने तो शैतान से फ़रेब खाया और औरों को भी अपनी सफ़ाई के लिए धोके की बातें कहते हैं कि अगले रसूलों और नबियों के खयाल में शैतान अपना खयाल मिला देता था। लोगों को बहकाने के लिए ये अजब झूट बाँधा है इस से ज़ाहिर है कि मुहम्मद शैतान के झांसे में आ जाता था और बज़ाते उस की मलूनियाँ</p>

तब सय्यदना ईसा ने उसे कहा ऐ शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि तो खुदावंद को जो तेरा खुदा है सज्दा कर और उस अकेले की बंदगी कर। तब शैतान आपको छोड़ गया। इस बयान से साफ़ मुसरेह है कि शैतान मसीह के दिल में कोई बात ना डाल सका जिससे वो उसके फ़रेब में आ जाते। हम सारे इन्सानों की ये हालत है कि वो हमारे खयाल और कलाम में मलूनी कर पाए फिर मसीह कभी इन्सान के फ़रेब में भी ना आए। किसी कलाम और काम में जब लोगों ने आपको फँसाना चाहा तो वो उनके फ़रेब में ना आए। बल्कि इस के बर-खिलाफ़ वही काम किया जो रास्त और दुरुस्त था। मसलन जब मसीह सलीब पर चढ़ाए गए और लोग कहते थे कि अगर इस्राईल का बादशाह है तो अब सलीब पर से उतर आए तो हम उस पर ईमान लाएंगे।

(हज़रत मती रूकूअ 27 आयत 46) मगर मसीह को उनका वो बादशाह जैसा वो चाहते थे बनने का शौक ना हुआ। और ना उनके फ़रेब में आए। मगर फ़रेब क्योंकर खाते वो तो उनके फ़रेबों से वाक़िफ़ थे। फिर देखो जब फ़रीसी आपकी आजमाईश करने के लिए आए और सवाल किया कि क्या रवा है कि मर्द हर एक सबब से अपनी जोरू को छोड़ दे। (हज़रत मती रूकूअ 19 आयत 30 वगैरह)

मगर वो उनके फ़रेब में ना आए और जिस नीयत से उन्होंने ने सवाल किया उस नीयत को तोड़ डाला। फिर एक मौक़े पर फ़रीसियों ने

(मिलावटों) और आमैज़िश को ना रोक सकता था।

फिर मास्टर राम चंद साहब एक फ़रेब का ज़िक्र करते हैं जो मुहम्मद ने यहूदियों से खाया। हम भी नाज़रीन की खातिर उनकी किताब अल-जवाब तहरीफ़-उल-कुर्आन से इस बयान को अख़ज़ करते हैं। सूरह इस्रा 17:76 बनी-इस्राईल की आयत हफ़्ता दो हशतम ये है कि “और वो तो लगे थे घबराने तुझको इस ज़मीन से कि निकालें तुझको वहां से और तब ना ठहरेंगे तेरे पीछे मगर थोड़ा।

तफ़सीर मुआलिम में इस आयत की निस्बत ये लिखा है। और इस आयत के माअनों में मुफ़स्सिरों ने इख़्तिलाफ़ किया है कि पस बाअज़ ने उनमें से कहा है कि ये मदीना की आयत है। क़ल्बी ने कहा जब रसूल-अल्लाह मदीना को तशरीफ़ लाए तो यहूद ने उनके क्रियाम से मदीना में कराहत की बसबब अपने हसद के पस वो उस के पास आए और कहा, ऐ कासिम के बाप (यानी ऐ मुहम्मद) तू तहक़ीक़ जानता है कि ये ज़मीन (मदीना या अरब) नबियों की नहीं है और तहक़ीक़ ज़मीन नबियों की शाम (इस्राइल) है और वही ज़मीन मुक़द्दस है और उस में इब्राहिम और अम्बिया थे। कि उन पर दुआ और सलामती हो। पस अगर तू मिस्ल उनके नबी है तो शाम को जा और तहक़ीक़ जो बाज़ रखेगा तेरे जाने को उस तरफ़ वो तेरा ख़ौफ़ है रोम से। (यानी रोम के बादशाह और

सलाह की कि आपको आपकी बातों में फंसाएं (मती रूकूअ 22 आयत 15) वगैरह और पहले आपकी बड़ी तारीफ़ कि ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और सच्चाई से खुदा की राह बताते हैं और किसी की कुछ परवाह नहीं करते वगैरह। पस हमसे फ़रमाएं कि आप क्या खयाल करते हैं कैसर को जज़्या देना रवा है या नहीं। फिर सय्यदना ईसा ने उनकी शरारत समझ कर उनसे फ़रमाया (देखो फ़ौरन फ़रेब मालूम किया) ऐ मुनाफ़िको मुझे क्यों आजमाते हो? जज़्या का सिक्का मुझे दिखाओ वो एक दीनार आप के पास लाए तब आपने उनसे फ़रमाया ये मूर्त और सिक्का किस का है। उन्होंने कहा कैसर का फिर आपने उनसे फ़रमाया जो कैसर का है वो कैसर को दो और जो खुदा का है खुदा को दो। फिर देखो वो फ़रेबी खुद ही जवाब सुनकर हैरान हुए और चल दिए। और इस तरह सद्क़ियों ने अपना दाओ चलाया और क्रियामत के इंकारी हो कर क्रियामत ही की निस्बत एक पेचीदा सवाल घड़ लाए। मसीह ने उनकी भी ग़लती को दुरुस्त किया। (मती रूकूअ 22 आयत 23)

अल-हासिल ऐ नाज़रीन मसीह कभी किसी फ़रेब में ना आए और ना किसी को फ़रेब दिया बल्कि सच्चाई से खुदा की राह बताते थे। पस ऐसे कामिल शख्स का आना इस दुनिया में किस लिए हुआ। क्या ये अम्र इतिफ़ाकी अम्र था या इस से कोई मक्सद मददे-नज़र था। ऐसा शख्स इस दुनिया में बिला-इरादा और बिला मतलब

खल्कत से कि ईसाई थे और बैतुल-मुक़द्दस उनके कब्ज़े में था। पस तहकीक़ अल्लाह अनक़रीब बाज़ यानी महफूज़ रखेगा तुझको रोम से और लश्कर के साथ कूच किया। (यानी मुहम्मद साहब ने) तीन मील मदीना से और एक रिवायत में आया है कि मुक़ाम ज़िल-खलक्रियह की तरफ़ हत्ता कि जमा किए अपने पास अपने सहाबी या रफ़ीकों को और (मुल्क-ए-शाम को) चले। पस खुदा ने नाज़िल की ये आयत (जो ऊपर नक़ल हुई) और ज़मीन (जिसमें से यहूद लोग मुहम्मद साहब को ख़ारिज किया चाहते थे) मदीना है। बैजावी में भी करीब इसी के लिखा है। अब नाज़रीन पर वाज़ेह होगा कि हज़रत मुहम्मद फ़रेब में यहूद मक्कार के इस वास्ते आ गए कि उनको ज़बरदस्ती नबी और रसूल बन जाने का ज़्यादा अज़हद शौक़ था। और इस मक्र की तकरीर में यहूद अहले-मदीना ने अपने एतिक़ाद बातिल की भी एक बात कह दी और वो ये है कि मुहम्मद साहब के ज़माने से पहले यहूद का एतिक़ाद ये था कि एक ऐसा नबी आख़िर-उल्ज़मान होगा कि उनको कुफ़्रार पर यानी ईसाइयान रोम पर फ़त्ह दिलवा दे और मुल्क-ए-शाम को और बैतुल-मुक़द्दस को इस में ही छीन कर यहूदियों के कब्ज़े में करवाते ताकि वो अपनी रियासत क़दीम कायम करें और बैतुल-मुक़द्दस को फिर तामीर कराके अहकाम तौरैत को बदस्तूर क़दीम के अमल करें। वो हज़रत ईसा इब्ने मर्यम को रसूल-ए-खुदा या नबी आख़िर-ऊज़-ज़मा या मसीह

नहीं आ सकता। जिसकी हर तालीम उम्दा और कामिल और जिसके काम निहायत मुहसिन और कामिल रूहानियत का नमूना हैं क्या उस का आना बेफ़ाइदा हो सकता है। और हम जैसे गुनेहगार गुमराह और फ़रेबी चाहे हमेशा आया करें? नहीं ये हरगिज़ नहीं हो सकता मसीह का आना किसी और के आने को मौकूफ़ करता है।

हाँ मुहम्मद के आने की गुंजाइश ना छोड़ी थी ये बहुत बड़ा तहक्कुम है जो मसीह के मुकाबिल में लोग मुहम्मद को मानते या पेश करते हैं मुहम्मद की सीरत तो उस को मसीह का पैरों बनने का मुहताज बतलाती है हमने दोनों की सीरत नाज़रीन के सामने बयान कर दी है और अगर मसीह को महज़ उस्ताद ही मानें ताहम भी वो मुहम्मद से आला और उम्दा उस्ताद है। क्योंकि खुदावंद तआला ने उस को बेफ़ाइदा ना भेजा एक बेगुनाह और ऐसा शख्स जिसकी ज़िंदगी में हर नूअ की खूबी थी और जो कामिलियत का नमूना है क्या कह सकते हैं कि क्यों आया। क्या खुदावंद ने ऐसे शख्स को भेज कर इन्सान से खिल्ली की? पलीद और गुनाह आलूदा दुनिया में एक बेऐब पाकीज़गी के क्या माअनी हैं? क्यों खुदा की सूरत जहां शैतान की सूरत की आशनाई है? यकीनन इसमें कुछ मस्लिहत है मसीह की सीरत ज़ाहिर करती है कि वो फ़ज़ल के किसी बड़े पैग़ाम को पहुंचाने के लिए भेजा गया। हाँ उस की सीरत साबित करती है कि इन्सान का अखलाकी और रूहानी उस्ताद नजात देने वाला बन कर भेजा गया।

हरगिज़ नहीं मानते थे और इस में फ़ख़र करते थे हमारी क्रौम ने ईसा को क़त्ल किया और बुरी बातें ख़िलाफ़ उनके कहते थे जैसे कुआन में मज़कूर है और इस वास्ते वो सख़्त दुश्मन उम्मत हज़रत ईसा के थे। वो एक और मसीह के मुतवक्क़े बैठे थे और आज तक बैठे हैं और उस का वही नाम बयान करते थे जो हक़िकतन एक नामों में से हमारे सय्यदना ईसा का है यानी अपने आख़िर-उल्ज़मान को वो मसीह इब्ने दाऊद कहते थे कि और आज तक कहते हैं कि वो आकर उनको मालिक बरोबजर यानी सारे जहान का कर दे और चूँकि हज़रत मुहम्मद साहब ख़ानदान इस्राईल से ना थे। और इस वास्ते ख़ानदान हज़रत दाऊद से नहीं हो सकते थे पस ग़ैर-मुम्किन था कि वो हज़रत मुहम्मद को अपना आख़िर-ऊज़-ज़मा नबी करार दें लेकिन इस शौक के मारे कि उनका नबी आख़िर-ऊज़-ज़मा जल्द ज़ाहिर हो कर उनको झटपट रियासत ज़मीन मुकद्दस और बैतुल-मुकद्दस को बहाल कराए उन्होंने ख़याल किया कि हज़रत मुहम्मद साहब ख़ानदान इस्राईल से नहीं हैं बल्कि ग़ैर-क्रौम अरब से हैं फिर भी क्या मजाल है कि वो दोनों से भी ज़्यादा दोस्त मज़हब यहूदी के और दुश्मन ईसा और उन की उम्मत के हो जाएं क्योंकि उन्होंने भी बहुत क़ानून यहूदी मिस्ल हलाल व हराम जानवरों वग़ैरह के इख़्तियार किए हैं और बैतुल-मुकद्दस को अपना क़िब्लानुमा ठहराया है पस अगर वो सच्चे नबी आख़िर-ऊज़-ज़मा हैं कि जैसे कि

पस आओ हम हक़ तआला का ये मक़सद ज़ाए ना करें। अपनी रुहानी तरक्की और कामिल होने के लिए हम उस के पास जाएं जिसमें ज़ाती खूबियां हैं। हमने पेशतर लिखा था कि ऐसी सीरत का आदमी किसी ने भी ना बतलाया और ना इन्सान बतला सकता है क्योंकि इस अम्र में तजुर्बा नहीं है तो क्योंकर मसीह जैसे कामिल शख्स की सीरत दुनिया में मालूम हुई इस बात का जवाब अक्वल ये है कि जिन्होंने जैसा उस पाक सरिशत की निस्बत देखा और सीखा वो बयान कर सकते थे और किया भी। और दोम इन रावियों में इल्हाम की मदद हुई कि मसीह की तस्वीर खींचे जिसमें कुछ मलूनी (मिलावट) या कमी ना करें बल्कि जैसा वो था उस को बजिन्सा पेश करें। पस इस सहूलत में हो कर इन रावियों ने कामिलियत की वाकई मूर्त दिखाई। और इसी लिए इन्सान को यकीन हो सकता है कि फ़क़त मसीह वो शख्स है जिसका नमूना हमारे लायक है।

यहूद मुंतज़िर बैठे हैं तो वो बेशक शाम में जाकर नसारा और रोम ग़लबा पावेंगे वगैरह। पस इस खयाल से यहूद मदीना ने हज़रत मुहम्मद से ये कह कर कि आप शाम को जाएं कि ज़मीन मुक़द्दस है और वही सब नबी और रसूल हुए हैं और कैसर रोम से खौफ़ ना करें अगर आप नबी हैं तो कैसर रोम से आप महफूज़ रहेंगे और उनके दिल में ये था कि अगर हज़रत मुहम्मद का दावा-ए-नुबूव्वत का झूटा है तो रोम में जाकर वहीं खप जाएं और इस तरह मदीना से खारिज होंगे। और जब आपको यहूदियों का फ़रेब मालूम हो गया तो थोड़ी दूर से लौट आए और यहूद को सज़ा दी। पस इस बयान से ज़ाहिर है कि नबी बन जाने के शौक़ के के मारे यहूदियों के फ़रेब में आ गए देखो किस बात के लिए फ़रेब में आ गए ऐसे शख्स की पैरवी करने को किस का दिल चाहता है। ये तो मिस्ल और इन्सानों की सी हालत है। इन्सान कभी एक दूसरे को फ़रेब दे लेते हैं और कभी खुद फ़रेब में आ जाते हैं। पस ऐ नाज़रीन होशियार हो कि कहीं तुम मुहम्मद के फ़रेब में ना आ जाओ।

पस साहिबो! जिस शख्स में हमसार इन्सानियत भरी है और हर तरह हमारी मानिंद कसूर मंद होता तो उसका किस मतलब के लिए मानें वो हमारा क्या सँवार सकता है उस के आने से दुनिया को क्या फ़ायदा है और तो औरों को

अपनी तालीम और नमूने से सिर्फ अपने मुवाफ़िक़ कर सकता है और बस।

नाज़रीन किराम कामिल नमूना ढूँढने में किसी का लिहाज़ करो? अपने आबाओ के बड़ों के रिवाज़ के सबब ना माने जाओ। कामिल उस्ताद उस को ना कहो जिसके ऐब छुपाए गए हों। या जिनके ऐब उनकी खूबियों में ढँपे हों। इस अम्र में चाहिए कि हम पासदारी ना करें बल्कि लिहाज़ और तरफ़दार होके अपने कामिल उस्ताद को ढूँढें। ख्वाह वो नासरत ही में मिले। क्योंकि ज्यूँ-ज्यूँ हम इस बात से तगाफ़ुली करते हैं त्यूँ-त्यूँ ज़ाहिर करते हैं कि रुहानी तरक्की की हमें कुछ गर्ज़ नहीं। कामिलियत और इस का नमूना हमारे किस काम है और एसे ख़यालों में पड़ के हम रुहानी और अख़लाकी ज़िंदगी में कोशिश नहीं करते। बल्कि मिस्ल हैवान-ए-मुत्लक के अपने नफ़्सानी हवस को क़ानून हिदायत और शराअ (शरीअत) कुदरती मानते हैं मगर ऐसा ना होना चाहिए। ये हमारी हस्ती की गर्ज़ नहीं। आओ हम अपनी असली कुदरती हालत पर आएँ। और इस बात का मक्दूर (ताक़त) फ़क़त मसीह की पैरवी से हासिल हो सकता है। हक़ तआला ये ज़रीया हर एक के सामने रखे। ये नमूना हर एक दिल की आँखें देखें।

आख़िर में हम चंद नामवरों और आलिमों की राय सीरत मसीह की निस्बत किताब लाईफ़ एंड वर्ड आफ़ क्राइस्ट मुसन्निफ़ा डाक्टर कनंग हाम गीकी से पेश करते हैं जिनसे नाज़रीन फ़ायदा उठा सकते हैं। चुनान्चे :-

टॉमस कार लायल, बड़े अदब से कहता है कि ईसा नासरी हमारा इलाही नमूना। उस से बढ़ करता हनूज़ इन्सानी ख़याल नहीं पहुंचा। एक बिल्कुल पाएदार और बेहद सीरत की सूरत जिसके मअनी हमेशा और अज़ सर-ए-नौ इस्तिफ़सार किए जाने और अज़ सर-ए-नौ ज़ाहिर किए जाने के मुतकाज़ी ना होंगे।

अल्लामा हरडर कहता है कि सय्यदना ईसा मसीह उम्दा तरीन और निहायत कामिल मअनी में इन्सानियत की ख़याली सूरत का वाकई ज़हूर है।

शाह नपोलियन पहला जो एक वसीअ-उल-अक्ल इन्सान था। जज़ीरा सेंट हलेना में एक दिन अपने दस्तूर के मुवाफ़िक़ बपशीन नामवरो की बाबत गुफ़्तगु करते हुए और उनके साथ अपना मुकाबला करते हुए दफ़अतन (फ़ौरन) घूम कर अपने साथी से पूछने लगा कि क्या तुम मुझे बतला सकते हो कि मसीह कौन थे। अफ़सर ने इकरार किया कि मैंने ऐसी बातों की बाबत अब तक कुछ ख़याल नहीं किया। नपोलियन ने कहा अच्छा मैं तुम्हें बतलाऊंगा। तब उसने अपने और यलान क़दीम के साथ मसीह का मुकाबला किया और दिखाया कि वो क्योकर उन पर ग़ालिब है और कहा कि मुझे गुमान है कि ज़ात इन्सानी की बाबत कुछ जानता और समझता हूँ। और मैं तुम्हें कहता हूँ कि वो सब इन्सान थे और मैं भी इन्सान हूँ। लेकिन एक भी मसीह के मुवाफ़िक़ नहीं है। सय्यदना ईसा मसीह इन्सान से ज़्यादा थे। सिकन्दर और सीज़र और चार्ली-मैन ने और मैंने बड़ी-बड़ी बादशाहतें कायम कीं लेकिन हमारी अक्ल के नतीजे किस बात पर मुन्हसिर थे। ज़ोर पर फ़क़त सय्यदना ईसा ही ने अपनी बादशाहत मुहब्बत पर कायम की और आज के दिन तक लाखों उस के लिए ख़ुशी से मरने को तैयार हैं।

एक और मौक़े पर नपोलियन ने उनसे कहा कि इन्जील कोई मजहूल किताब नहीं है। लेकिन एक ज़िंदा मख़लूक़ है ऐसा क़वी और तवाना कि मुख़ालिफ़ को मरलूब करता है फिर अदब से छूकर कहा कि मेज़ पर ये किताब अलकुतब व मिस्री है मैं इसे पढ़ते थक नहीं जाता और यक़साँ ख़ुशी से हर रोज़ ऐसा ही करता हूँ। रूह इन्जील के हुस्न से फ़रेफ़ता हो कर अपनी नहीं रहती। ख़ुदा उस पर सरासर काबिज़ होता है। वो उस के ख़यालों और कुव्वतों की हिदायत करता है। वो उस की ही (सय्यदना ईसा की) उलूहियत कुल्लिया का कैसा सबूत है। मगर इस हुकूमत में उस का सिर्फ़ एक मुद्दआ है यानी फ़र्द बशर की रुहानी कामिलियत उस के ज़मीर की सफ़ाई सच्चाई के साथ उस कामिल। उस की रूह की नजात। लोग सिकन्दर की फ़तहयाबियों पर हैरान होते हैं। लेकिन यहां एक ऐसा फ़त्हमंद बहादुर है जो इन्सानों को उनकी आला तरीन बेहतरी के वास्ते अपनी तरफ़ खींचता है जो अपने से मिलाते है अपने में मिलाता है। एक क्रौम को नहीं कुल इन्सानों को।

रोज़ोन कहता है कि अनाजील के मुकाबले में फिलासफ़ों की किताबें बावजूद अपनी धूम धाम के कैसी अदना हैं क्या मुम्किन है कि वो नविशते जो ऐसे आला और ऐसे सादा हैं। इन्सान का काम हों। क्या हो सकता है कि वो जिसकी ज़िंदगी वो बयान करती हैं महज़ इन्सान से ज़्यादा ना हो? क्या उस की चाल चलन में कोई बात ख़ारिजी अंथनोज़ी-

अस्ट या हिर्स वाली है उसके अत्वार में कैसी तिलावत कैसी तहारत है उस की तालीम में कैसी मोअस्सर खूबी है। या उस की मिसलों में कैसी बालाई उस के लफ़्ज़ों में कैसी गहरी हिक्मत है कैसी दिलेरी और उस के जवाबों में कैसी मुलायम और मुनासिबत है अपनी ख्वाहिशों पर कैसा तसल्लुत है। कहाँ वो इन्सान और कहाँ वो हुक्म जो बिला कमज़ोर हुए और बिला दिखाए के अमल करना सहना और मरना जानता है? ऐ मेरे दोस्त आदमी इस तरह की बातें तो ईजाद नहीं करते। और सुक्रात की वारदातें जिन पर कोई शुब्हा नहीं करता ऐसी मुसद्दिक नहीं है और मरना जानता है कि ऐ मेरे दोस्त आदमी इस तरह की बातें तो ईजाद नहीं करते। और सुक्रात की वारदातें जिन पर कोई शुब्हा नहीं करता ऐसी मुसद्दिक नहीं हैं जैसे वाक्रियात मसीह हैं। वो यहूदी इस अख्लाक का कभी खयाल नहीं कर सकते थे। और इन्जील अपनी सदाकत की ऐसी आला और क़तई और बेनज़ीर अलामतें रखती है कि उनके ईजाद करने वाले इस से अजीबतर होंगे जिसकी वो तस्वीर खींचते हैं। (यानी इन्जील किसी की ईजाद की हुई कहावत नहीं है मगर वाक़ेअ सदाकत से पुर है।)

नाज़रीन खुदा करे कि हम सब इस तौर से बल्कि बढ़कर अपने मौला और नजात देने वाले मसीह की तौकीर करें और उसे मिल जाएं। इस वसीले से इस जहान की आलूदगियां खुद ही छूट जाएंगी। और हम खुदा के लायक खानदान बन जाएंगे। आमीन सुम्मा आमीन या रब्बू-आलमीन

तम्बीह! खयाल रहे कि हमने इस रिसाले में कुर्आन और इन्जील को अपनी अपनी जगह पर सही व दुरुस्त फ़र्ज़ करके उनके हवाले दीए हैं। अगर कोई साहब इस मुआमले में अक्ली बहस करना चाहे। तो ला-हासिल है। ऐसी तकरीर किसी दूसरे मौक़े पर कार-आमद होगी।

मुसन्निफ़ जी. एल. ठाकुर दास